अंक : अप्रैल-जून, 2023

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

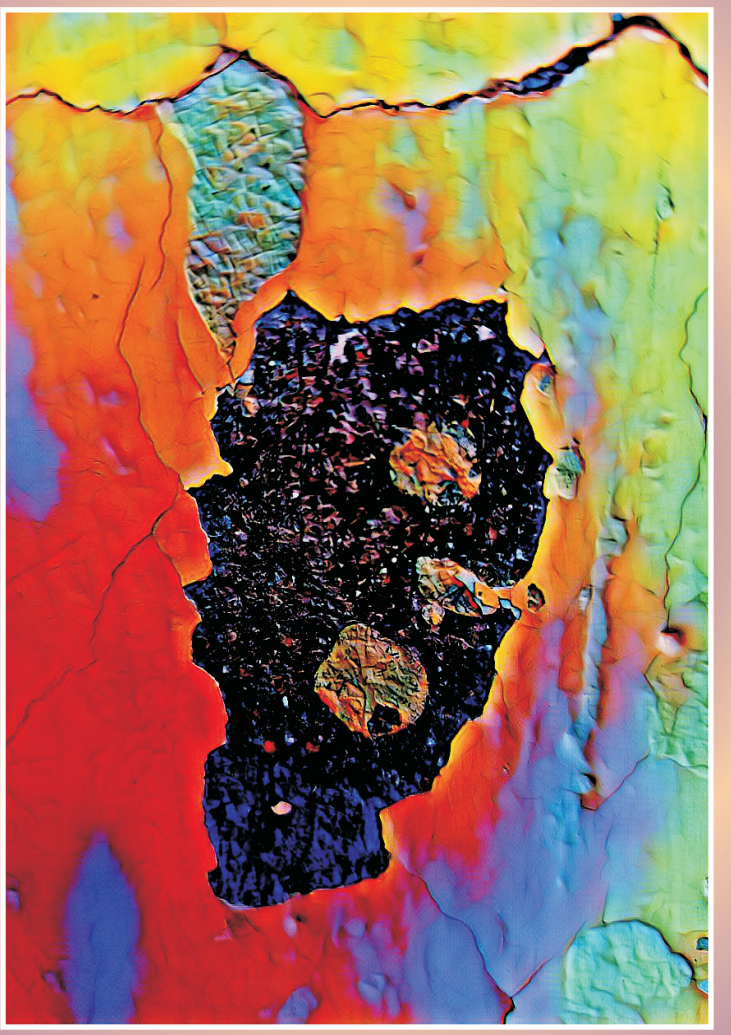

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अप्रैल–जून, 2023

बरस : 46 अंक : 3 पूर्णांक : 159

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

आवरण
अंतरिक्ष
सुपुत्र पवन चौहान, गांव–पोस्ट महादेव
तहसील–सुंदरनगर, जिला–मंडी
(हि.प्र.)175018

रेखाचितराम
शैलेन्द्र सरस्वती
नारायणी निवास, मोबाइल टावर रै साम्हीं
धरनीधर कॉलोनी, उस्ता बारी रै बारै
बीकानेर (राज.) 334001

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com
e-mail : rajasthalee@gmail.com

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया
Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

राजस्थानी पत्रकारिता सारू सैयोग अर संरक्षण री दरकार — *श्याम महर्षि* — 3

आलेख

राजस्थानी अखबारनवीसी अर साहित्य री पत्रकारिता — *नन्द भारद्वाज* — 4

शोध आलेख

राजस्थानी बात साहित्य मांय चित्रित तीज-तिंवार — *डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता* — 10

व्यंग्य

आओ, कुटीजां! — *डॉ. हरिमोहन सारस्वत 'रूंख'* — 16

लाज-सरम — *बसन्ती पंवार* — 19

जात्रा संस्मरण

बांसवाड़ा पछै उदयपुर बासै मांय रोट्यां री कबड्डी — *माणक तुलसीराम गौड़* — 22

कहाणी

तीरथ — *अरविंद सिंह आशिया* — 29

लघुकथा

नाक री सळ / पिछाण — *उर्मिला माणक गौड़* — 35

कविता

रिक्साहाळो / भीलण / मोखातर — *मोहन पुरी* — 37

गजलां

सात गजलां — *राजूराम बिजारणिया* — 41

कूंत

अखंड काव्य-साधना रो खंडकाव्य 'गाधि सुत' — *जयसिंह आशावत* — 45

संपादकीय

राजस्थानी पत्रकारिता सारू सैयोग अर संरक्षण री दरकार

राजस्थानी पत्रकारिता यूं तो आजादी सूं पैलां ई सरू होयगी ही। 'लड़ाई रा सांचा समचार', 'रियासती' अर 'आगीवांण' आद अखबारां में खबरां राजस्थानी में ईज छपती, पण जठै तांई साहित्यिक पत्रकारिता री बात है, वा आजादी रै पछै ईज सरू हुई। देस नै आजादी मिल्यां रै लगैटगै अेक दसक पछै किशोर कल्पनाकांत 'ओळमों' पत्र रै सीगै इण पत्रकारिता री सखरी सरुआत करी। लगैटगै आं ईज बरसां में रावत सारस्वत साहित्यिक पत्रिका 'मरुवाणी' रो सुभारंभ करयो। इणरै पछै तो राजस्थानी में केई पत्र-पत्रिकावां रो प्रकाशन सरू हुयो, पण आं मांय सूं घणकरी पत्रिकावां अेक-दो बरसां में ईज बंद होयगी। इणरै लारै मोटी कमी सैयोग अर संरक्षण री रैयी।

राजस्थानी में अबार लग जित्ती ई साहित्यिक पत्र-पत्रिकावां निकळी है, उणमें घणकरी रै संपादन सूं लेय'र प्रबंधन तक रो जिम्मो राजस्थानी रै किणी साहित्यकार आपरै बूतै ई उठायो। पत्र-पत्रिका रै प्रकाशन लेखै किणी साहित्यकार रो काम संपादन तांई तो ठीक है, पण विग्यापन भेळा करणा, पत्रिका रा ग्राहक बणावणा अर अठै तांई कै डाक-डिस्पेच ई आपरै हाथां करणी मोटी मजबूरी रैयी है। अेकाध पत्रिका नै छोड'र सगळां सागै ओ ईज रासो है। राजस्थानी पत्रिका रै अर्थ-प्रबंधन सारू कोई सेठ-साहूकार आपरै मन सूं जुड़ण सारू आगै नीं आया, जद कै देस री अर्थ-व्यवस्था में आधै सूं बेसी भागीदारी राजस्थानियां री है।

राजस्थानी में अबार तांई लगैटगै सौ नैड़ी पत्र-पत्रिकावां निकळी है, पण आज री तारीख में राजस्थानी में पांच-सात ई नियमित पत्रिकावां नीं है। अकादमी पत्रिका 'जागती जोत' रै टाळ 'राजस्थली', 'माणक', 'कथेसर', 'हथाई' अर 'रूड़ो राजस्थान' आद पत्रिकावां दोरी-सोरी चाल रैयी है। आज आं पत्रिकावां नै सैयोग अर संरक्षण री दरकार है। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी अबकाळै नौ बरसां बाद राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां नै फेरूं कीं आर्थिक इमदाद देवण रै सागै 'राजस्थली' नै इण बरस रो 'रावत सारस्वत राजस्थानी पत्रकारिता पुरस्कार' भी दियो है, इण सारू अकादमी रै निर्णायक मंडळ रो घणै मान आभार। भरोसो है, राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां नै सैयोग अर संरक्षण सारू भामाशाह आगै आसी अर राजस्थानी पत्रकारिता रो भविष्य ऊजळो होसी।

-श्याम महर्षि

नन्द भारद्वाज

राजस्थानी अखबारनवीसी अर साहित्य री पत्रकारिता

आज रै जुग में अखबार रोजीना री जरूरतां मांय अेक लूंठी जरूत मानीजै। आखरां सूं ओळख राखणवाळा लोग दिनूगै चाय री प्यारली साथै अखबार री उडीक अवस राखै। वा बात दूजी कै घणकरा लोगां नै अैड़ा विसन पोसावै पण कोनी अर जिकां री अेक निस्कार आगै सगळा समचार बोदा अर बासी लागै। फेरूं ई अखबार तो आपरी जिम्मैवारी अेक हद तांई पूरी करण नै आफळै ईज है। अेक ई मुलक में भांत-भांत रा लोग, न्यारी-न्यारी भासावां अर हरेक भासा रा छापां में कीं फेरबदळ रै साथै छपियोड़ा वै ईज सागण समचार बीत्योड़ै बगत में मुलक री हलचल में कठै कांई विरतांत बरतीजै, कै मानखै साथै किण भांत घात हुवै, कै उणसूं कुण कित्तो कळपै अर किणनै कांई हासल व्है। इण लेखै जे आपणी मायड़भासा राजस्थानी में छपणवाळा छापां-अखबारां अर पत्र-पत्रिकावां री पड़ताल करां तो इणी नतीजै पूगां कै हाल इण बात रो मंडाण व्हैणो बाकी है। जरूत सांप्रत व्हेतां थकां ई हाल घणा गरथ चाईजै। यूं मन राजी करण नै कह सकां कै आपणा बडेरां घणो ई कियो अर इण जोखम भरियै जमारै में वै खुद आथड़ता रह्या अर आपां नै पगां हालता अवस कर दीन्हा। इण सूं बधीक वै कांई कर सकता! जठै पगो-पग आडी आवती राज-समाज री अणूती अबखायां अर पूरसल साधन अर सुभीतां रो ई तोटो रह्यो व्है, वठै किणनै कांई मैणी दिरीजै। इण लेखै तो वां जिको कीं करियो, वांरो घणै मान सम्मान अर औसाण।

जिनगाणी री असलियत नै आपरै तंई जाणणी अर फेर उणनै ओपता सबदां में बिगतावणी हरेक मिनख अर संवेदू

:: ठिकाणो ::
71/247 मध्यम मार्ग
मानसरोवर
जयपुर-302020
मो. 9829103455

 ISSN : 2320-0995

सिरजणहार री पैली जरूत हुया करै। ओ काम वो आपरै कमतर-कायदै अर कळा-सिरजण रै जरियै अवस सांभै। इणी लेखै कळा-साधना अर साहित्य सिरजण करतां अखबार-नवीसी री जिम्मैवारी कीं बधीक पण जाणीजै, क्यूंकै कळा-दरसाव या साहित्यर-सिरजण री सांभ कर लेवण सूं उणरो मकसद पूरो नीं व्है। उण कळा-सिरजण नै आम लोगां, पारख्यां अर विवेकसील पाठकां-दरसकां तांई पुगावण रो जिम्मो कुण लेवै, इण बात री गिनार करणी पण उत्ती ई जरूरी। रोजीना समै-समाज री कळझळ, च्यारूंमेर री आछी-माड़ी घटणावां अर राज-समाज री कारवायां रै साथै मिनख रै कमतर अर नवै सिरजण नै जरूतमंद लोगां तांई पुगावण री आ लूंठी जिम्मैवारी निभावण में आज अखबार अर पत्रिकावां अेक हद तांई कारगर जरियो मानीजै। अखबार आठूं पौर आपरै असवाड़ै-पसवाड़ै अर दुनिया में दूर-दराज जिकौ कीं घटित व्है, उणरी पूरी जाणकारी भेळी कर रोजीनां आपरै पाठक तांई पुगावै अर उण पूगत रो दायरो पण बधावै। अबखै बगत में लोगां नै सावचेत करै। इण बुनियादी जरूत समचै जद आपां राजस्थानी भासा री अखबारनवीसी अर साहित्य-कळा सूं जुड़ियोड़ी पत्रिकावां री पड़ताल करां तो लागै, इण बात री ढंगसर सरुआत व्हेणी हाल बाकी है। हिन्दी अर भारतीय भासावां री अखबारनवीसी लारला सौ बरसां में जठै तांई पूगी, राजस्थानी में तो अखबार री कायदै सूं सरुवात ई व्हैणी बाकी है। राजस्थानी रा दूजा बडा नगरां, ज्यूं—जोधपुर, बीकानेर, उदैपुर, कोटा, अजमेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर इत्याद जिलां सूं निकळण वाळा कीं हिन्दी अखबारां आपरा अेक-दो पेज राजस्थानी में जरूर देवण री कोसीस करता रह्या है, पण ओज्यूं इण लेखै वांरी कोई पिछाण निस्चै ई नीं बणी, जदकै केई हफ्तैवारी, पखवाड़ी अर मासिक अखबारां अर पत्रिकावां आपरी न्यारी पिछाण अवस बणाई। राजस्थानी भासा में साहित्य सूं जुड़ी पत्रकारिता री सरुवात जरूर कीं असरदार रही अर आजादी पछै रा कीं बरसां में ई राजस्थानी रा जिका शोध संस्थान कायम हुया, वां आपरी पत्रिकावां रो भासाई माध्यम भलांई हिन्दी राख्यो व्है, वां में छपणवाळी सामग्री हरमेस राजस्थानी साहित्य अर जीवण सूं जुड़ियोड़ी ई रही। इण लेखै 'परंपरा' शोध पत्रिका, 'मरु भारती', 'वरदा', 'रंगयोग', 'रंगायन' इत्याद पत्रिकावां राजस्थानी भासा अर साहित्य री सार-संभाळ में ओपतो काम करती रही है। खुद राजस्थानी रा सिरजणधरमी लेखकां ई आपरा निजू जतनां सूं केई आछी राजस्थानी पत्रिकावां री सरुवात कीवी, जिकी बरसां तांई राजस्थानी रचनाकारां नै ओपतो मंच देंवती रही। पिलाणी सूं नागराज जी शर्मा रै संपादन में 'बिणजारो' सरीखी लूंठी सालीणी पत्रिका लारला 42 बरसां सूं राजस्थानी साहित्य री सगळी विधावां में नवी सामग्री छापती रही है। लारला सित्तर-अस्सीं बरसां में राजस्थानी साहित्य सूं जुड़ी

पत्रकारिता री जे पड़ताल करां तो इणी नतीजै माथै पूगां कै इण भासा अर साहित्य नै संजोयां राखण में लेखकां अर राजस्थानी हेताळुवां री भूमिका निस्चै ई सरावण जोग रही।

राजपुताना में आजादी री लड़ाई रै दरम्यान अर आजादी पछै रा आं बरसां री पड़ताल करियां निस्चै ई राजस्थानी अखबारनवीसी अर साहित्य सूं जुड़ी पत्रकारिता रै इतिहास री केई बातां रो खुलासो व्है। राजस्थानी में इण सिलसिलै री सरुवात करणवाळा इतिहासू पुरखां में पंडित रामकरण आसोपा, सूर्यकरण पारीक, शिवचंद्र भरतिया, एल.पी. टैस्सीटोरी, जय नारायण व्यास, सुमनेस जोशी, ठा रामसिंह, केसरीसिंह बारहठ, गणेसलाल व्यास 'उस्तास' सरीखा नामी विद्वानां, आगीवाणां अर सिरजणधर्मियां री जाझी भूमिका रही है।

आजादी री लड़ाई रै दरम्यान राजस्थान रा न्यारा-न्यारा हलकां में आन्दोलन नै नवी रफत देवण सारू मुलक रा आगीवाण नेतावां अखबारनवीसी री अहमियत पिछाणी अर जग्यां-जग्यां सूं साप्ताहिक, पखवाड़िया, मासिक अखबारां अर पत्रिकावां रो प्रकासण सरू कियो। आंदोलन री जरूरत मुजब न्यारा-न्यारा हलकां में हिन्दी, राजस्थानी अर हलकै विसेख री बोलियां में पत्रिकावां अर अखबार छापण री हूंस बणायां राखी। मारवाड़ में लोकनायक जय नारायण व्यास री अगुवाई में जनजागरण अर आजादी री चेतना नै बळ देवण सारू वां ब्यावर सूं सन् 1925 में 'आगीवांण' अर 'रियासती' सरीखा अखबारां री सरुवात करी, जिका लोगां रै बिच्चै खूब चावा रह्या। उणी समचै सन् 1927 में वां बंबई सूं छपण वाळै 'अखंड भारत' रो संपादन ई सांभ्यां राख्यो। 'आगीवांण' रै साथै ई जोधपुर सूं अचलेश्वर प्रसाद 'मामा' हिन्दी में 'प्रजासेवक' नांव सूं अेक साप्ताहिक अखबार सरू करियो, जिको आन्दोलनकारियां बिच्चै खूब चावो अर कामयाब रह्यो। इणी भांत जयपुर, बीकानेर, भरतपुर, मेवाड़, कोटा-बूंदी अर प्रदेस रा दूजा नगरां सूं ई हिन्दी अर राजस्थानी में अखबारां अर पत्रिकावां रै प्रकासण रो जिको सिलसिलो सरू हुयो वो आजादी मिळण तांई उणी हूंस अर रास्ट्रीय चेतना री भावना सूं जारी रह्यौ। आं अखबारां री भासा भलांई हिन्दी बधीक रही व्हो, पण आन्दोलन री केई खबरां, रिपोट अर लोगां रा बयान यथावत राजस्थानी भासा में पण छपता। आजादी रा आगीवांण आम सभावां में लोगां सूं वांरी ई जबान में बतळावता अर आपसरी री बंतळ तकात वांरी जबान में हुया करती। जोधपुर रै अलावा मारवाड़ रा केई मोटा स्हैरा ज्यूं नागौर, पाली, बाड़मेर, जालौर, जैसलमेर, फळोदी इत्याद सूं ई वां बरसां में हिन्दी अर राजस्थानी छापां री खूब बधोतरी हुई।

सन् 1947 में जद देस आजाद हुयो अर सन् 1949 में राजस्थान प्रान्त रो गठण हुयो, वां ईज दिनां बाबा भीमराव अंबेडकर री अगवाई में देस रै संविधान नै अंतिम रूप दिरीजै हो अर उणमें सगळी प्रादेसिक भासावां नै संविधान री आठवीं सूची में हलकै

विसेख री प्रांतीय भासा रो दरजो दिरीजण री प्रक्रिया जारी ही। उणी बगत हिन्दी नै मुलक रै सगळां सूं बडै भू-भाग री भासा रो दरजो दिरावण सारू आथूणै अर उत्तर-मध्य भारत रा जिका प्रदेसां नै जोरांमरदी हिन्दी प्रदेस में सामिल करीज्या वां में राजस्थान अर अठै री लूंठी भासा राजस्थानी नै हिन्दी रो ई हिस्सो मान लीवी अर अठै रा आगीवाणां री भौळप कैवो या अणूती उदारता, वां भासा अर संस्कृति रै साथै जित्तो बडो अन्याय करियो, उणरो खामियाजो राजस्थान री जनता बरसां सूं भोगती आई है। राजस्थान रा आगीवाणां नै दिलासो ओ ईज दिरीज्यो कै कीं बरस पछै मुलक रा दजा प्रदेसां री भासावां नै जद संविधान री आठवीं सूची में दरज करीजैला, उण बगत राजस्थानी नै ई संवैधानिक मान्यता हासल व्हे जावैला, पण सौभाग नै राजस्थान रा लोग हाल तांई उडीकै। राजस्थानी नै संविधान री सूची सूं बारै छोड देवण रो नतीजो ओ हुयो कै अठै री स्कूलां में भणाई रो माध्यम हिन्दी बणगी अर राजस्थानी नै फगत रस्म अदायगी रै रूप में हिन्दी री पाठ्य पुस्तकां में नमूनै रै रूप में सामिल कर लोगां री भावनावां नै दबायां राखण री नीयत लारला सित्तर बरसां सूं यथावत चाल रही है। राजस्थानी भासा अर संस्कृति रै नांव माथै बण्योड़ा संस्थानां री दुरगत आं बरसां में अैड़ै मुकाम माथै पूगगी कै वांरो आपो अर पिछाण अबै नांव मात्र री रैयगी है। भणाई रो माध्यम राजस्थानी नीं व्हेवण सूं अखबार या राजस्थानी पत्रिकावां रो पाठकीय आधार ई नीं बण सक्यो। हालत आ बणगी कै राज-काज अर सार्वजनिक सेवा में राजस्थानी भासा रो वैवार ई खतम कर दियो, फगत साहित्य, संस्कृति अर आपरी भासा सूं भावना-सरूपी लगाव राखणवाळा लोगां तांई भासा री चिंता सीमित व्हेयनै रैयगी। स्कूलां-कॉलेजां में भणाई रो माध्यम फगत हिन्दी अर अंगरेजी रैयग्यौ अर नवी उदारवादी बाजारू विश्व-व्यवस्था में तो अबै हिन्दी री हालत पण घणी सरावणजोग नीं रही। मातभासा राजस्थानी फगत गळी-चौपाळ अर ग्रामीण लोगां रै आंगणै री भासा व्हेयनै रैयगी, वा बात दूजी है कै उण आंगणै कायम रह्यां सूं ई भासा री असल जीवारी व्हैण अर उणी वजै सूं उण भासा री जड़ां घणी गैरी बणी रैवै अर लारला कीं बरसां में आपरी भासा नै लेय कीं नवी चेतना ई जागी है। देखां, इणरो कित्तो औपतो अर निरणाऊ असर बणै।

मुलक रा दूजा हलकां करतां भासा रै लेखै यूं राजस्थान री बारी सगळां सूं आखरी में आवै अर राजस्थान में ई आथूणै हलकै री दीन-दसा भणाई रै लेखै तो धाप नै माड़ी। यूं इण रा दीखता कारण सामाजू अर आरथिक हालात तो गिणाईजै ई है, पण असल कारण है आज री बिटळियोड़ी राजनीती अर लोगां री माली हालत, जठै अस्सी फीसदी लोग छप्योड़ै अखबार-पोथी-पत्रिका नै अजूबै री निजर सूं देखै, जे बुनियादी शिक्षा रै नांव माथै दो आखर सीख मांड भी लेवै तो ई वांनै बरतण बपरावण रो अभ्यास वै बरसां पैली ई

छोड चुक्या। इण गत में भासा कै अखबारनवीसी री चरचा रो वां सारू कांई अरथ बणै अर वो ई राजस्थानी रै पख में, आ बात विचारणजोग अवस लागै। यूं बात वांरै हीयै ढूकती लाग सकै, पण बगत आयां जबान कुण खोलै अर किण भांत?

आपनै आ बात जाण नै इचरज व्हैला कै आखै राजस्थान में आजादी मिळियां सूं अबार तांई रा सात दहीकां रो जे लेखो लेवण बैठां तो इत्तो संतोख जरूर व्है कै आं बरसां में भासा अर साहित्य रै समचै इत्तो ठावो काम तो जरूर हुयो कै राजस्थानी भासा रै साहित्य अर संस्कृति री न्यारी-न्यारी विधावां में हुयै काम मुजब उणरी अखबारनवीसी अर साहित्य सूं जुड़ियोड़ी पत्रकारिता री ठावी चरचा जरूर उगेर सकां। कीं गिणावण जोगा छापां रा हवाला अर ओपती मिसालां ई अवस हाथ आवती दीखै। ज्यूं सन् 1956-57 में रतनगढ़ सूं राजस्थानी रा चावा कवि किशोर कल्पनाकान्त जद 'ओळमों' नांव सूं अेक साहित्यिक छापै री सरुवात करी तो वांनै आछी कामयाबी मिळी। उणी रै लगै-टगै जयपुर सूं रावत सारस्वत 'मरुवाणी' अर बुद्धिप्रकास पारीक 'ईसरलाट' पत्रिकावां री सरुवात कीवी, जिकी आगै केई बरसां तांई बगतसर निकळती रही। इणी भांत कळकत्तै सूं रतन साह रै संपादन में 'लाडेसर' री सरुवात हुई। जोधपुर सूं सन् 1960 में कोमल कोठारी अर विजयदान देथा आपरै गांव बोरूंदा में लोककथा लेखण रो नामी संस्थान रूपायन कायम कर वठै सूं 'वाणी' नांव रो छापो सरू करियो, तो जोधपुर सूं ईज उण बगत रा युवा कवि पारस अरोड़ा अर हरमन चौहान सन् 1965 में 'जाणकारी' नांव सूं साहित्यिक पत्रिका निकाळणी सरू कीवी। जोधपुर रा ई वासी अर राजस्थानी रा नामी कवि सत्यप्रकास जोसी सन् 1970 में बंबई सूं 'हरावळ' सरीखी नांमी माहवारी पत्रिका सरू कीवी, जिणमें आखै मुलक रा राजस्थानी कवि-लेखक आपरी रचनावां रै मारफत साम्हीं आया। बीकानेर सूं कथाकार मूळचंद प्राणेस 'जलमभोम' नांव रो छापो निकाळणो सरू करियो तो वठै सूं डॉ. मेघराज 'हेलो' सरीखी स्तरीय साहित्यिक पत्रिका री सरुवात कीवी। सन् 1970-71 में तेजसिंह जोधा जयपुर सूं 'राजस्थानी-अेक' रै मारफत नवी राजस्थानी कविता रा पांच टाळवां कवियां नै इण गाढी सोच अर सुथराई सूं पेस करिया कै वा पत्रिका राजस्थानी कविता में अेक नवै जुग री सरुवात मानीजी। सन् 1973 में तेजसिंह जोधा 'दीठ' नांव री स्तरीय पत्रिका री सरुवात करी, पण वा दो अंक निकळ्यां उपरांत बंद व्हैगी। सन् 1972 में ई जोधपुर सूं माणक मेहता रै संपादन में छपणवाळै दैनिक अखबार 'जलते दीप' में हरेक हफ्तै राजस्थानी भासा में अेक परिसिस्ट छपणो सरू हुयो, जिणरो संपादन म्हारै जिम्मै रह्यो। इण छापै री मारफत राजस्थानी में नवा लिखारां नै औपतो मंच मिळियो। जोधपुर सूं ई पारस अरोड़ा सन् 1982 में 'अपरंच' नांव री तिमाही पत्रिका रा आठ अंक नियमित रूप सूं दो बरस काढ्या तथापरांत वां पत्रिका रो प्रकासण रोक दियो, वा ईज पत्रिका सन् 2009 सूं वां पाछी छापणी सरू करी, जिणनै वांरो सपूत गौतम अरोड़ा

सन् 2020 तांई निकाळतो रह्यो। जोधपुर सूं कवि मीठेस निरमोही 'आगूंच' नांव सूं अेक आछी साहित्यिक पत्रिका सरू कीवी, जिणरा केई अंक संग्रहणीय रह्या। पाछी सन् 1977 में श्रीडूंगरगढ़ सूं श्याम महर्षि रै संपादन में 'राजस्थली' री सरुवात पण राजस्थानी में आपरो आछो नांव कमायो, जिकी आज 45 बरस पार करियां उपरांत ई नियमित रूप सूं बरोबर नीकळती रही है। सन् 1980 में माणक जी रै सुरगवास उपरांत वांरी याद में वांरा छोटा भाई पदम मेहता राजस्थानी में 'माणक' नांव रै मासिक छापै री सरुवात करी, जिको आज चार दसक पूरा करियां उपरांत ई उणी उमाव अर कामयाबी सूं राजस्थानी पाठकां रै साम्हीं राजस्थानी सिरजण अर जीवण रा तमाम पखां री आछी सामग्री पेस करै अर राजस्थानी री अेक कदीमी पत्रिका गिणीजै। सन् 1983 में राज सरकार बीकानेर में राजस्थानी भासा साहित्य अर संस्कृति अकादमी री थरपणा कीवी, जिणरी साहित्यिक पत्रिका 'जागती जोत' आज राजस्थानी री ठावी पत्रिका गिणीजै। कैवण रो अरथ ओ कै नवी सदी री सरुवात सूं पैली राजस्थानी में साहित्य री पत्रिकावां जिको माहौल बणायो, वो निस्चै ई राजस्थानी रै नवै लेखण नै औपतो मंच देवण में आछी कामयाबी हासल कीवी अर नवी सदी रै साथै ई केई नवी पत्रिकावां अर नवा लेखक इत्ती हूंस अर उमाव सूं सक्रिय व्हेय चुक्या है कै अबै राजस्थानी नै किणी रै स्सारै या मैर मया री जरूत कमती ई लखावै। आज राजस्थानी में 'माणक' (संपादक पदम मेहता), 'राजस्थली' (संपादक श्याम महर्षि, 'जागती जोत' (संपादक शिवराज छंगाणी), 'कथेसर' (संपादक रामस्वरूप किसान, डॉ. सत्यनारायण सोनी), 'लीलटांस (संपादक दूलाराम सहारण), हथाई (संपादक भरत ओळा), 'रूड़ौ राजस्थान' (संपादक सुखदेव राव) सरीखी कित्ती ई नियमित पत्रिकावां आपरो जिम्मो ई संभाळ राख्यो है अर इण लेखै म्हनै आ कैवतां कोई संकोच नीं कै राजस्थानी में साहित्य सूं जुड़ी पत्रकारिता रो आज अेक पुख्ता आधार निस्चै ई बण्यो है, जिको राजस्थानी रै भावी विगसाव नै अेक भरोसो देवै।

◆◆

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

राजस्थानी बात साहित्य मांय चित्रित तीज-तिंवार

संस्कृति रो अरथ अर परिभासा-प्राणी जगत मांय मानव नै इण सारू सिरै अर सगळां सूं बुद्धिवान मान्यो गयो है, क्यूंकै बो संस्कृति रो वरण कर लियो, संस्कृति री वजै सूं ईज मिनख मांय बदळाव आयो अर मिनख मांय भी संस्कृति सिमरध व्ही है। संस्कृति सूं अळगो कर'र मिनख रो अध्ययन नीं करयो जाय सकै। इणी भांत मिनख सूं संस्कृति नै भी न्यारो नीं करयो जा सकै। इणी बात रो पख लेंवता डॉ. एम.एल. गुप्ता लिखै, ''जे मिनख सूं उणरी संस्कृति छीन ली जावै तो जको बाकी बचैला, बो मात्र दूजा जिनावरां रै समान अेक प्राणी ही। मिनख अर जिनावर मांय अंतर सिरफ संस्कृति रै कारण है।'' डॉ. गुप्ता री बात घणी उम्दा नै संस्कृति री खरी बात कैवण वाळी है। संस्कृति है तद ईज तो मिनख-मिनख है नीं तो इण दुनिया मांय जीव तो अणूता ई फिरै पछै बाकी जीवां में अर मिनख मांय ओ संस्कृति रो ईज तो फरक है। यां यूं कैव सकां कै मिनखाजूंण रौ निरमाण संस्कृति सूं ईज हुयौ है तो कोई अजोगती बात कोनी अर इत्तो ई नीं, इण आखै मानव समुदाय मांय यानी आखै जगत मांय अगर मिनखां री जीवण प्रणाली मांय फरक लखावै, भेद लखावै, वांरा जीवण मूल्यां मांय जको फासलो लखावै उणां लारै ई मूळ कारण संस्कृति ई है। संस्कृति नै आपां जद भी पूर्ण रूप सूं समझण री खेचळ करां तो ठा पड़ै कै संस्कृति मिनख द्वारा सिरजित होवै अर मिनख नै ईज सुसंस्कृत बणावण सारू इणरो निरमाण हुयो है। इणी बात कांनी इसारो करता 'हरस्कोविट्स' लिखै, ''संस्कृति मानखै द्वारा सिरजित पर्यावरण रो ईज अेक अभिन्न अंग है।''

:: ठिकाणो ::
प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, जिला-सवाई माधोपुर (राज.) 322201
मो. 9462607259

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा री बात संस्कृति नै खासा सुभट रूप सूं परिभासित करै, पण ध्यान सूं देखां तो लगैटगै विद्वानां री राय रो सार अेक ई जैड़ो देखण नै मिळै कै संस्कृति बा जकी मिनख नै मिनख बणावण रो काम करै अर उण मिनख मांय मिनखपणो भी बण्यो रैवै तद ईज उणरो मिनखपणो कायम रैय सकै। इणी बात रो पख लेवता एम.एम. चांद लिखै, ''संस्कृति सबद रो अरथ सुधरयोड़ी चोखी स्थिति मान्यो गयो है।'' संस्कृति रा अरथ नै ओजूं बेसी सुभट करतां अर उणरो अरथ बतावता डॉ. एस.एल. नागौरी लिख, ''संस्कारजन्य गुणां नै संस्कृति कैयो जावै है।'' संस्कृति रै अरथ नै सावचेती सूं समझां तो ठा पड़ै कै मिनख नै जकी चीज परिस्कृत करै, मिनख बणावै उणनै असभ्य सूं सभ्यता कांनी लेय जावै उणनै संस्कृति कैवै। निर्णय तांई पूगण सूं पैली इणरी परिभासावां नै भी जाणणो जरूरी है, जकी इण भांत है—

संस्कृति री परिभासा

रामधारी दिनकर कैवै, ''संस्कृति अेक अैड़ो गुण है जको आपां रै जीवण मांय व्याप्त है। अेक आत्मिक गुण है जको मानखै रै सुभाव मांय उणी तरै व्याप्त है जिण भांत फूलां मांय सुगंध अर दूध मांय मक्खण।'' टायलर रै मुजब, ''संस्कृति बा जटिल पूर्णता है जिणमें ग्यान, विस्वास, कलावां, नैतिक आचरण, कानून, प्रथा अर कोई भी दूजी खिमतावां अर आदतां आवै, जिणनै मिनख इण समाज रो अेक सक्रिय सदस्य होवण रै नातै अरजित करै है।''

पिंडिगटन रै मतानुसार, ''संस्कृति उण भौतिक अर बौद्धिक साधनां अर कारणां रो आखो जोग है जिणरै द्वारा मिनख आपरी प्राणीशास्त्रीय अर सामाजिक आवश्यकतावां री संतुस्टि अर आपरै पर्यावरण सूं अनुकूलन करै है।'' कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी रै मत मुजब, 'आपां रै रहन-सहन रै लारै जकी आपां री मानसिक अवस्था होवै है, जकी मानसिक प्रकृति है जिणरो उद्देस्य आपां रै जीवण नै परिस्कृत, शुद्ध अर पवितर बणाणो है अर आपरै उद्देस्य री प्राप्ति करणो है, वा ईज संस्कृति है।'' प्रो. हुमायूं कबीर रै विचार सूं, ''संस्कृति भासा अर कला, धरम-दरसण, सामाजिक रीति-रिवाजां, आदतां अर राजनीतिक संस्थावां अर आरथिक संगठनां रै माध्यम सूं अभिव्यक्त होवै है। इणां मांय सूं न्यारी-न्यारी अेक इकाई संस्कृति नीं है, पण संयुक्त रूप सूं बां जीवण री अभिव्यक्ति है, जिणनै आपां संस्कृति कैवां हा।'' आं तमाम परिभासावां रै पाण औ कैयो जा सकै कै संस्कृति कोई सामान्य चीज कोनी। इणरो दायरो घणो लूंठो अर विसाल है। उणरो क्षेत्रफल आखी दुनिया है अर उणरा आयाम मानव जीवण रा सगळा क्रिया-कळाप सायद इणी तरै री परिभासा देंवता समाज मनोविज्ञानी हंसराज भाटिया लिखै, ''संस्कृति रा पद केई तरै रै अरथां मांय प्रयुक्त होवै है। प्राय: लोग इणरो अरथ शिष्ट व्यवहार अर सुरुचि सूं लगावै है। समाजशास्त्री इण पद रो प्रयोग घणो विशिस्ट अर विस्तृत अरथां मांय करै है। इणमें ग्यान,

विश्वासां, कला नीतियां, कानून रीतियां, रिवाजां, शिल्पां, विचारां अर मूल्यां रो समावेस है। आ इणसूं बणी अेक विसम समग्रता है, जकी हर व्यक्ति, समाज रो सदस्य होवण रै नातै सीखै है। आ आपां री सामाजिक देय है, जिणमें देस, मिंदर, जाति अर परिवार जैड़ी संस्थावां सामिल है अर जिणरै मांय हर तरै रै रीति-रिवाज अर लोकनीतियां, आछा-बुरा रो भेद अर विचार, भोजन पैदा करणै अर इस्तेमाल रै उपाय, शिल्प अर मनोरंजन रा ढंग, जीवण अर चिंतन री विधियां अर संचार रा तरीका पाया जावै है। हर समाज दूजां समाजां सूं काम करण रा तरीकां मांय भिन्न है। किण तरै किणी समाज रै सदस्य आपरी साधारण आवश्यकतावां पूरी करै है। उण समाज री संस्कृति रो सरूप निर्धारित करै।''

आं सगळी परिभासावां सूं संस्कृति किणनै कैवै आ बात सुभट होय ज्यावै। इणरै पछै संस्कृति रै बारै मांय कीं कैवण री दरकार कोनी। पण आ सांस्कृतिक छिब राजस्थानी बात साहित्य मांय किण रूप मांय है अर उणरा कुण-कुणसा आयामां रो बखाण बात साहित्य मांय होवै है ओ जाणणो भी घणो जरूरी है। राजस्थानी बात साहित्य राजस्थानी संस्कृति री अणमोल धरोहर। आं बातां मांय राजस्थानी संस्कृति रा चितराम ठौड़-ठौड़ देखण नै मिलै अर इत्ता रूपाळा कै जे आपां नै अै चितराम देखणा व्है तो बात साहित्य री शरण में जावणो पड़ैला। चूंकि साहित्य समाज रो दरपण होवै है, इण खातर राजस्थानी निवासियां री सामाजिक, आरथिक, राजनीतिक अर धारमिक स्थिति रो दरपण बात साहित्य ईज है। इण दरपण मांय आपां अठै रै निवासियां रै रैण-सैण, वेशभूषा, खानपान, उच्छब, तिंवार आद रा पड़बिंब आछी तरै देख सकां हा। लोकसहित्य भी अेक अैड़ो साहित्य है जिणमें संस्कृति रो साचो अर स्वाभाविक चित्रण देखण नै मिलै।''

तीज-तिंवार

राजस्थान अेक रंग-रंगीलो प्रांत, संस्कृति री लूंठी विरासत वाळो प्रदेस, अठै रा तीज-तिंवार तो मिनख री जियाजूण मांय यूं बस्योड़ा, जाणै वै उण रा मूळभूत अंग होवै। अठै रा मिनख सारू जित्ती जरूरी रोटी अर बाकी सब चीजां है उणसूं भी जरूरी अठै री संस्कृति अर तीज-तिंवार है। राजस्थान रो मिनख भूखो रैय सकै पण बिना तिंवार नीं रैय सकै। इण सारू अठै रै मानखै री दैनिक क्रिया मांय तीज-तिंवार रा दरसण ठौड़-ठौड़ देखण नै मिलै। इत्तो ईज नीं, राजस्थान मांय तो अैड़ो कोई दिन कोनी जिण दिन कोई न कोई तिंवार नीं होवै। अठै तो हर दिन कोई न कोई तिंवार जरूर ई आवै।

पण अठै हर दिन तिंवार हुया उपरांत भी केई तिंवार अैड़ा है जका अनादिकाल सूं मनाया जावै। ज्यूं—होळी, दिवाळी, तीज, आखातीज, गिणगौर, ऊबछठ, राखी, सीळसातम... जैड़ा केई तीज-तिंवार। पछै आपां रै राजस्थान मांय इणसूं भी बधनै औरूं ई तिंवार मनाया जावै जिणरौ उल्लेख तो नीं मिलै पण वै हर पल मान्या जावै। उणमें पैलो तिंवार है पति-पत्नी (प्रेम-प्रेमिका) रै मिलण रो तिंवार अर दूजो अगर कोई मिनख साची बात सारू

माथो कटाय दियो तो 'मरण तिंवार'। आपां रै अठै मरण नै मंगळ मानीज्यो है। इण सारू अठै मरणो भी उच्छब रै मांय आवै अर प्रेम तो सदियां सूं उच्छब रो ईज विसय रैयो है। पुराणै बगत मांय जद साधनां रो अभाव हो। मिनख पाळा चालता या साधन होवता तो भी घोड़ा, ऊंठ, बळद आद अैड़ा बगत मांय आयो गयो कै प्रेमी या प्रेमिका नै कद दिल लेवणो चाईजै। देखो :

पंच कोसा प्यादो रहै, दस कोसां असवार।
के तो नार कुभारज्या, के रांडुल्यो भरतार।।

अर्थात् मिनख जे उपाळो है तो पांच कोस जातो रैवणो चाईजै अर कनै घोड़ो, ऊंठ कै बळदगाडी है तो दस कोस भी जातो रैवणो चाईजै। जे वै नीं जावै तो या तो लुगाई गईबीती है या पछै धणी खुद।

तीज

इणसूं बड़ी उच्छब अर तिंवार री बात कांई होवैला पण आपां रै अठै लुगाायां सारू 'तीज' रै तिंवार नै अणूतो ईज मोटो तिंवार मानीज्यो है अर तीज वाळै दिन जे किणी लुगाई रो धणी आवतो होवै तो उण सारू फगत लुगाई ई नीं, आखा गांववाळा किण भांत राजी होवै देखौ :

''तीज रे दिन री वाट। ज्यूं-ज्यूं तीज नजदीक आवै राजाजी कंवरजी री मेहमानदारी ने खातिर री तैयारी करै। तीज रो दिन आयो, गांव में उमंग लाग री कै जवांई सा पधारेला। हींडा घल रिया, जगां जगां पांवणा रे कपड़ा रंगवा सारू रंग री कूंडियां भर दीधी। सवारी री तैयारी व्है री। कंवराणी जी वाट देख रिया। चौक में सिनांन करण ने बाईजी बैठिया। पांच दस डावड़ियां ऊभी। कोई पीठ कर री। कोई माथो धोय री। कोई पगां रै झांवरो लगाय री। गीत गाय री। बडा उछब उमंग रै साथै सिनांन कर दिया...।''

तीज परब रै अवसर पर लुगायां दिनभर व्रत-उपवास राखै अर सिंझ्यां री बगत पूजा-पाठ करनै चांद रा दरसण कर सातु रो सेवन करै। राजस्थान मांय बूंदी अर जयपुर मांय औ तिंवार विसेस उमंग रै साथै मनायो जावै। जियां :

प्रोहित बूंदी परणियो, रसियो बगसीराम।
सांयण तीजा सासरे कीनो जावण काम।।

तीज परब री सबसूं मोटी विसेसता आ है कै सुरम्य प्रकृति री आड मांय क्रीड़ावां करती रमणियां रो उमाव-उछाव अर आमोद स्वच्छंद नीं होवै, बल्कै धारमिक भावनावां अर मानतावां सूं बाधित होवै। औ तिंवार धणी-लुगाई रै प्रगाढ प्रेम रो प्रतीक है। इण पुनीत अवसर माथै राजस्थानी नारी रो सील, सिणगार अर प्रेम सूं समन्वित रूप आपां रै मानस पटल माथै अंकित व्है जावै। औ अवसर राजस्थानी नारी री इण भावना कै भरतार (धणी) अर करतार (भगवान) जीवंत प्रमाण है, जिणरी अभिव्यक्ति आं बातां में होवै है। 'पनां री वीरमदे री वारता' रो अेक दांखलो देखो :

''इण भांति तीज मंडवा रो बखत आयो। आणंद को समद जाणै रांका निसिर सायौ। सहर मांहि सूं तीजण्यां निसरै छै। केसरियां कसूमल पौसाकां करियां। घणां गहणां मैं लूंमा झूंमा हुई थकी मोहोला मोहोला मां सुं नीसरी छै। राग-रंग करै छै। हिंडोला लहरियां गावै छै।''

इणी तरै री बात रो अेक उदाहरण भळै प्रस्तुत करयो जावै है जिणमें नायिका नायक नै तीज रै दिन निवेदन करनै बुलावो भेजै है :

''इण भांत बातां पर बूबना आपरे महल आई। इतरै सावण रो महिनो आईयो। तरै तीज रै दिन नैत्रा खवास नूं कही आन जलाल साहब नूं कहि आवजै तंयार रहज्यो म्हे लेवणे नूं आवा छां महल रै तळे बाग छै उठे विराजे।''

दसरावो

आसोज मईना मांय दसरावै रो तिंवार मनायो जावतो हो। राजपूती परंपरागत प्रदेस होवण रै कारण राजस्थान मांय दशहरै रो घणो महत्त्व रैयो है। राजपूत वरग रो अेक खास तिंवार है। मध्यकाल मांय जोधपुर अर कोटा मांय इण तिंवार री विसेस महत्ता ही अर सामंत वरग अर जन साधारण दोनूं ई घणै आंणद सूं इण तिंवार रो आयोजन करता हा। राजस्थानी बातां मांय भी इण रा उटीपा उदाहरण मिलै। 'राव मालदे री बात' रो अेक दाखलो इण गत है :

''जासोजी दशराहो पूजि अर मुहिम कीधी। तरहा बड़ी फौज धर मालदेजी आया गांम गांगहि जाय डेरा किया। फौज घारू ही कानी दोड़ी छै मेड़तें री रेत ससीजै छै। देशहरो छै।''

होळी

राजस्थानी जनजीवण नै आंणदित उमंग मांय मगन करण वाळा तिंवारां मांय होळी रो भी विसेस महत्त्व है। इण तिंवार मांय सगळा जाति-वरग, लुगायां अर मोटियार घणै आणंद सूं फाग उच्छब में भाग लेंवता हा। मध्यजुग मांय इण अवसर माथै डांडिया गैर नाच रो आयोजन भी होवतो हो। राजस्थानी बातां मांय भी इण परब रा प्रमाण मिलै है। जियां :

''इतरै होळी आई नै, होळी गेहर बाजण लागी, सुहाणे गढ गेहर बाजै। इतरै वीरमदेवजी कहयो—जोया ठाकुरां रो ढोल आबारो छै आपणो ढोल लोह रो छै तिफा मधुरो बाजै छै।''

अठै परंपरागत अैड़ी प्रथा रैयी है कै होळी आद तिंवार रै अवसर माथै सगळा वरगां रै स्त्री-पुरुस ऊजळा अर चटकीलै रंग रा गाभा पैरै अर अेक नूंवी बात जकी कै अठै रै जनजीवण मांय व्याप्त रैयी है कै अमल नै गाळ'र लेवणो अठै री सांस्कृतिक परंपरा रो प्रतीक मान्यो जावै है। जियां 'बात मांडणसी कूंपावत री' रो अेक दाखलो देखो :

''होळी रो दिन छै। मांड घोड़ै चलाण नै आप कर बागो, बांथ हथीयार नै चढीयो, धरां नुं कर दूदासाही केसरियो थोड़े रा कांठा गले सेर री अमल री चाक पोते मांहे छै।''

गणगौर

गणगौर रा तिंवार रा भी केई दरसाव देखण में आवै अर बीकानेर री गणगौर तो उण काळ मांय अणूती चावी रैयी ही। इणनै देखण सारू तो मोटा-मोटा राजकंवर भी इच्छा राखता। इणी तरै री गणगौर रै दरसाव 'सजनां सुजान री बात' मांय भी देखण नै मिलै देखो :

''एक दिन वनाधिकारी ने एक विशाल काय नव हाथे सिंहराज के वन में आने की सूचना दी। कुमार अपने साथियों के साथ सिंहराज की शिकारी कराने गया। दो दिन के पड़ाव में शिकार हो गई। कुमार ने मदनगढ लौटकर शिकार का बड़ा जल्सा किया। शिकारियों को हाथी, घोड़े और जागीरें दी गईं। कवि और गायकों को वांछित मोहताजे मिली। उस मजालिस में किसी कवि नै बीकानेर के गणगौर के उत्सव की चर्चा की। कुमार के साथियों ने बीकानेर की गणगौर की सवारी देखने की इच्छा व्यक्त की। कुमार ने गणगौर पर चलने की स्वीकृति प्रदान की।''

दिवाळी

अठै दिवाळी जैड़ो तिंवार तो घणां लाड कोड सूं मनायो जावै अर उणरी पूजा करी जावै। दीवाळी रा तिंवार री महिमां रो अेक दरसाव इण भांत है :

''तरै व्यासजी कहै छै—राजा सांभळ। काती वदि इग्यारस नै श्रीमहालिखमीजी जागै नै काती वदि अमावस श्री लिखमीजी रो दिन छै। लोक घर नीपै, धवळै नै ऊजळाई करै छै। जांणै-काती वदि इग्यारस नै श्री लिखमीजी जागिया छै सो मांहरै घरै पधारसी। तिण सूं लोक घर सिणगारै छै। राजा! काती वदि अमावस आवै तद परभात रा ऊठ नै दांतण सिनांन करीजे। रोकड़ रूपइयां री पूजा कीजे। केसर कुंकम सो पूजा करिनै अमरत चढाइजे। पुसब चढाइजे। अगर-धूंप खेवी नै नैवेद चाढीजै। मुखवास मुदरा पिण चढाइजे। दांन बीड़ा चढाई नै मिठाई पतासां रो परसाद बांटीजै। घणो उछाह करि बांमणां नूं सकति माफक टिप्पणा दीजे। तठा उपरांत भांत-भांत रा जीमण बणाय नै अेकासणौ कीजै।''

इण तरै अठै केई तरै रा तीज तिंवारां रा दरसण राजस्थानी बात साहित्य मांय आपां नै देखण नै मिलै। अै तिंवार अठै री सांस्कृतिक विरासत नै पोखण रै साथै-साथै भेळप अर भाईचारो, प्रेम, सौहार्द, मिनखपणो आद बधावण रो काम करै तो साथै ई साथै न्यारा-न्यारा धरमां रा लोगां नै अेक डोर मांय बांधण रो भी काम करै। राजस्थान आं तिंवारां री वजै सूं ईज तो रंग-रंगीलो अर सोवणो प्रांत है, जैड़ो दुनिया मांय कोई कोनी। लोकजीवण मांय हरेक अवसर माथै अेक सजीव स्फूर्ति व्याप्त ही। इण खातर ई ओ प्रदेस जीवंत उच्छबां रो प्रदेस मान्यो जावै।

◆◆

डॉ. हरिमोहन सारस्वत 'रूंख'

आओ, कुटीजां!

आओ कुटीजां! कुटीजणै रो औ नूंतो फगत आम आदमी सारू है। लूंठो कुटीजै कोनी, दूबळै नै कुट्यां मिलै ई के! लोकराज में बचसी बोई तो कुटीजसी। तो भोळा-स्याणां मिनखो! देस रै बिगसाव सारू कुटीजण नै कड़तू त्यार करल्यो। बियां त्यार के करणी है, कड़तू तो थांरी पैली ई कूड़ेड़ी है, बरसां बरस होयग्या गदीड़ खावतां। लखदाद है थांरी टाट अर कड़तू नै, खाल कुटाणी सोरी कोनी!

कैयीजै, ''कूटणो अेक कारागिरी है तो कुटीजणो अेक तप।'' इण तप रो सौभाग फगत आम आदमी नै ई मिलै, मोटोड़ा कदैई कुटाई रो परमानंद नीं लेय सकै। जे बांनै कुटाई रै नफै-नुकसाण रो ठाह लाग जावै तो थांरो हक खुसतां जेज नीं लागै। कूट खायां सरीर ई सावळ रैवै। जे सावळ कुटीजै तो डील रा सै बट-बांयटा निसर जावै। रोज कुटाई मिलणै सूं किणी योग अर कसरत री दरकार नीं रैवै। 'देगी मिरच रै तड़कै सूं अंग-अंग फड़कै' का नीं, पण कुटाई सूं तो फड़क्यां ई सरै।

कबीर जी निरमळ सुभाव सारू निंदक राखण री सीख दी है पण कुटेव अर मन रो मैल तो कुटाई सूं ई छूटै। गाभां रै मैल नै ई देखल्यो, थापी सूं कूट्यां पछै लारै रैय तो जावै दिखाण! मैल अर कुबाण सारू कुटाई सूं आछी कोई दवाई कोनी। मां री कुटाई रो तो कैवणो ई कांई, नीं पछै बापूजी रो बरंगो! घणी करो तो गुरुजी री परसादी चेतै करल्यो। टाबर कित्तो ई कुचमादी होवै, अेकर तो जावण सो लाग ई जावै। साची बात आ, आपां बित्ता ई

:: ठिकाणो ::
रूंख-भायला चौक
सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
राजस्थान-322201
मो. 9414090492

सुधरां जित्ता कुटीजां। आ दवाई मिनख भेळै डांगरां पर ई सांगोपांग असर करै। गधियै नै ले ल्यो, बो ई कुटीज्यां काम देवै, नीं पछै धूड़ में पड़्यो गळेटी खा बोकरै। दवाई मिल्यां पछै चुसकै ई नीं। कुतियो होवै का मारकणो पाडो, बांदरा होवै का जंगळ रा सेर, कुटाई सूं सै सुधरै। जणाई पुलिस कनै आ रामबाण दवाई हर घड़ी त्यार लाधै। आपरै कदेई मचमची उठै तो पिता'र देख लेया। सभ्य समाज में काण-कायदां री रुखाळ सारू कूटणो अर कुटीजणो भोत जरूरी है। कैबत है :

भांग मांगै भूंगड़ा, धतूरो मांगै घी।
दारू मांगै खूंसड़ा, जी में आवै तो पी।

दारूड़ियै सारू तो कुटाई संजीवणी रो काम करै। आछो कूटणै सूं मिरच-मसालां रो स्वाद ई बधज्यै, मिनख अर जिनावर री तो बात ई के करां!

बियां कुटाई भांत-भांत री होवै। तन, मन अर धन तीनूं ई न्यारै-न्यारै ढंग सूं कुटीजै। डील री कुटाई सूं बेसी पईसै री कुटाई। अेक पईसो कूटै दूजो कुटावै। कॉरपोरेट रै धंधां नै देखल्यो। किणी शोरूम, मॉल का मल्टीप्लेक्स में बड़तां ई आपरी कुटाई चलू! बड़नो ई जरूरी है। घर रो गाडो सावळ गुड़कतो रैवै इण सारू जावणो ई पड़ै। जे टाबर टोळ साथै है तो आपरी कुटाई सावळ होवै। दस रुपियां रा मक्कीदाणा पचास में लेवणा पड़ै। जे टाबरिया ठंडो पीवण री तेवड़ी, तो बीस आळी कोकोकोला आपरै सौ रो दड़ीड़ देसी। जूनै थियेटर में सागी फिल्म री टिगट सित्तर में लेय'र देख सको, पण मल्टीप्लेक्स में तो ढाई सौ री टाट कुटावणी पड़ै। सूट मुलावो भलांई बूट, आपरी कुटाई तै है। कॉरपोरेट रा गदीड़ खायां आप चूं ई नीं कर सको...!

पईसै री कुटाई में राज रो तो कैवणो ई कांई! बिना थापा-मुक्की करयां टाट में कियां दी जावै, आ स्याणप राखणिया ई तो राज करै। बै जच्चै जणा थांनै जरका सकै, थारी गोझी में हाथ घाल सकै। थे मूंडो फलको सो करो भलांई, राज नै कुण रोकै! इण कुटाई री एफआईआर कठैई दरज नीं होवै। आप कनै कुटीजणै रै सिवा दूजो रस्तो ई कोनी। भांत-भांत रा टैक्स, टैक्स पर टैक्स, फेर सरचार्ज, सैस न्यारा! कुटाई में थोड़ी-घणी कसर रैवै तो डीजल अर पेट्रोल रा बधता भाव रोज अेक थाप चेप देवै। गैस रा सिलेंडर ई अबार दे डुक पर डुक घाल रैया है। बिजळी अर पाणी रै बिल आछै-आछां रा चौसरा चला दिया, पण धन है थांनै, थे जाबक ई नीं चुसको, सात सिलाम थांरै हौसलै नै!

कुटाई तो राजनीति में ई होवै, पण बांरी बातां ई न्यारी! आछै भलै मिनख नै 'पप्पू' बणा'र इस्यो कूटै कै लाई पांघरै ई नीं। कित्ता ई ताफड़ा तोड़ो, अेकर झालर बाजी तो बाजी। इण ढाळै री कुटाई में सै सूं घणो कुटीजै पाल्टी रो कार्यकर्ता। पांच बरस जचा'र कड़तु कुटावै बो—पईसै सूं, टैम सूं, आछी-माड़ी बातां सूं। धरणै प्रदरसणा में उण री गत और घणी माड़ी हो जावै। कांई ठाह कांई-कांई तोलणो पड़ै, कठै-कठै जाजम बिछाणी

पड़ै, हथेळ्यां में थूकाणो पड़ै पाल्टी रै लूंठै गोधां नै! गळै में पटको घाल्यां, जाड़ भींच्यां बो कुटीज बोकरै, कदास टिगटड़ी हाथ ई आवै तो! पण टिगट घोसणा रै बगत गदीड़ इस्यो पड़ै कै पलछिण में आंख्यां साम्हीं अंधारो हो जावै। उण घड़ी फगत गदीड़ री पीड़ नै पंपोळणै रै सिवा कीं पल्लै नीं रैवै। पण राजनीति तो है ई कुटाई रो दूजो नांव, कोई उछळभाठो लेवै तो सरी!

कुटाई में हथियार ई अेक महताऊ ठौड़ राखै। पारंपरिक हथियारां में बेलण, चींपियो, चप्पल अर झाड़ू हुवै जिका फगत मां रै हाथ में ओपै, लात, हाथ अर डांग नै बापू आपरी मैर में कर राख्या है। यार-भायला तो डुक अर चूंठियां सूं ई काम काढ लेवै, घणी करी तो दग्गड़, भाठा! गुरुजी तड़ो, कामड़ी बरतै तो लूंठा दुस्मीं लाठी, तीरकबाण अर तलवार रो जोर मानै, नीं पछै दुनाळी का पिस्तौल।

दुनिया रै बिगसाव भेळै अै हथियार ई बदळीज्या है। नवी तकनीक रै हथियारां में सै सूं मारक है—मोबाइल फोन अर इंटरनेट। आं सूं जचै जणां किणी भी सादै-बुधै री चाल, चरितर अर चेहरै री कुटाई हो सकै। गदीड़ अर डुक सूं डूंगा घाव देवण री खिमता राखै अै हथियार। जे आपरै नीं जचै तो 'हनीट्रेप' में पज्योड़ै किणी भाइड़ै सूं मिल लेया, ऑनलाइन कुटाई कांई होवै, ठाह लाग जासी। डुक अर गदीड़ सूं मोटा हथियार अबार सीडी अर एमएमएस गिणीजै जिका नेतावां भेळै अलेखूं लोगां नै नागा कर'र इस्या कूट्या कै भळै पांघरया ई नीं। सूचना क्रांति रै जुग में कुटाई रो ओ निरवाळो काम लगोलग बध रैयो है।

बिगसाव री इण गाथा में 'ब्रांड रा टैग' ई कुटाई रा नूंवा हथियार है, जिकां रै आगै आपणा हाथ मत्तै ई पाधरा हो जावै। आपां चाल'र बां कनै जावां अर चला'र कुटाई रो नूंतो देवां, भाइड़ो, जरकावो म्हांनै! अब कोई आगै मंडै तो बेई बापड़ा के करै, कूटण सारू ई तो बैठ्या है! बां रै मुजब कुटाई रा टैग मिनख नै भीड़ में अळघी पिछाण दिरावै।

सौ बातां री अेक बात, मिनख हो भलांई पईसा, कूटण रा मजा ई न्यारा। कूटण री सीख तो बरसां पैली चावा-ठावा दूहाकार किरपाराम जी ई दे मेल्ही है :

गैला, गंडक, गुलाम, बुचकारयां बांथां पड़ै।
कूट्यां देवै काम, रेरू राखो राजिया।।

आं में थे किसी 'कैटेगिरी' रा हो, कुण जाणै। पण, कांई फरक पड़ै! थे तो सदांई कुटीजता आया हो। कुटाई रै रोळै-कूकै में 'कैटेगिरी' ठाह लगावण री बेल्ह कठै! थे तो बस इत्तो चेतै राखो, देस रै बिगसाव सारू थांरी कुटाई जरूरी है। थे जित्ता कुटीजस्यो। देस बित्ता पांवडा ई आगै बधसी। इण मायनै में थां सूं मोटो देसभगत कुण! चुनावी साल में कुटीजण रो नूंतो आयोड़ो है, कुटीजो भई, कुटीजो! थांरै भेळै दोय चार गदीड़ म्हे ई खाय लेस्यां। लखदाद है थांरी कड़तू नै, लखदाद है थारी देसभगती नै!

◆◆

बसन्ती पंवार

लाज-सरम

'करै सरम, जिणरा फूटै करम'—आ सोचण-समझण री ई बात नीं है, इणनै जिनगाणी मांय उतारण री जरूरत है। लाज-सरम रो जमानो तो अबै गयो। औ तो अबै शोध रो विसै बणग्यो है। पैला ज्यूं कहाणी कै बात सरू करता, जद कैवता हा कै—अेक बगत री बात है...'' जैड़ी बात हुयगी है। म्हारी मानो तो अबै किण सूं ई किणी बात री सरम नीं करणी ज्यूं कै—

टाबरिया आधा-अधूरा गाभा पैरै तो इण बात रो गीरबो हुवणो चाईजै कै वै पिछड़्योड़ा नीं है... फालतू रो कपड़ो खराब नीं करै... बचत रो मैतव सीखग्या है। अैड़ै में इणां सारू कोई इनाम-इकराम री ई योजना बणावणी चाईजै।

अबै थे तो पुराणै जमानै रा हो, सो घूंघटै री बात करो पण आ तो सोचो कै उण बगत री लुगायां घूंघटो काढ'र अेक आंख नै सीसी कैमरो बणाय लेंवती, पण अबै वा अबखाई ई नीं रैयी। अबै तो सुसरो जी नै 'हाय डैड...' कैवण में ई गरब हुवै। सासू भलांई बकती रैवो कै, 'कांई सुसरै नै थारै पीवरियै सूं ल्याई है?' तो सा अबै अैड़ी बातां करणी ओपै कोनी।

अबै सुबै-सिंझ्या फू-बईदां नीं हुवै... थांरै घर रै आगै-लारै... बरंडै मांय कै बगीचा आद जग्यां में कचरै रो ढेर लाग्योड़ो है... माछर बटका भरै है... बीमारियां फैल रैयी है तो इणमें सरम री कांई बात? अै बापड़ा माछर, कचरो, डाक्टर कठै जावैला? इणां रो ई तो ध्यान राखणो जरूरी है। इणां नै तो जितरो बढावो देवो, उतरो ई चोखो है।

:: ठिकाणो ::
90, महावीरपुरम
चौपासनी फनवर्ल्ड रै लारै
जोधपुर-342008
मो. 9950538579

निजरां बदळतां ई निजारा बदळ जावै। मोहल्लै री नाळियां कादै सूं भरयोड़ी है... घर रै आगै खाडा-खोबचा है। सड़कां तो खैर अळगी है उणां रा खाडा गिणण री सरधा तो किणी री ई कोयनी। ढांडा-दराव लड़ता-लड़ता थांरै अेकाधो सींगड़ो ई लगाय देवै... मेणियै री सूगली थैलियां बायरै रै सागै उडती-उडती थांरै घर मांय आय जावै... औ सै देख'र थांनै सरम करण री कीं जरूरत कोयनी। औ सै तो आखै देस मांय ई है, तो इण बात माथै ई गीरबौ हुवणो चाईजै। चावो तो होड ई करवाय सको कै सै सूं सूगलो मोहल्लो किसो है? अर जीतण वाळो इनाम रो हकदार तो बणै ई है। जे अैड़ो करो तो इण सारू थांनै अेक कमेटी ई बणावणी पड़ैला जिकी ठौड़-ठौड़ जाय'र ईमानदारी सूं आपरो काम करै। अठै बेईमानी कै रिश्वत नीं चालणी चाईजै क्यूंकै आखिर सूगलवाड़ै नै इनाम देवण री बात है कोई साफ-सफाई जैड़ी नाजोगी री नीं है।

आ तो हुई सूगलवाड़ै नै जितावण री बात, आवो अबै चोरियां री बात करां। अठै सरमजोग बात आ है कै इण काम मांय लुगायां पिछड़्योड़ी है। अबै भई समानता रो इधकार है, मिनख कर सकै तो लुगायां क्यूं नीं? यूं देखां जणै तो लुगायां औ काम सरू कर दियो है, पण फटफटियो चलाय'र गळै री चेन... बटुवो आद खींच'र उडण मांय अजै घणी लारै है। तो बैनड़ियां, था इणमें ई हुंसियार हुय जावो अर छोरा-छोरियां नै ई नीं मंझियोड़ै मिनखां नै ई धूड़ चटाय दो।

इण सूं फायदो औ हुवैला कै लुगायां नै पकड़ण सारू लुगाई पुलिस री जरूरत पड़ैला तो पुलिस मैकमौ लुगायां री भरती करैला... बेरुजगारी री समस्या कम हुवैला। चोर-चोर मौसेरा भाई ज्यूं लुगायां, लुगायां रो ओळबो सुण'र थांनै पाछो ओळबो देवैला कै, 'थां मरद लोग औ काम कांई ठा कदै सूं करता आय रैया हो, म्हां लुगायां थांनै कद सूं झेलां हां अर अबै लुगायां मैदान मांय उतरी है तो थांनै दोरौ लाग रैयौ है, अैड़ौ क्यूं? लुगायां रो ई इधकार है, थां कर सको कांई, अै नीं कर सकै? अरे थे तो मोटा-मोटा पोस्टर छपवाय'र लगावो कै, 'हिम्मत वाळी लुगायां रो इलाको', एशिया रो पैलो मोहल्लो जठै री लुगायां अैड़ी धाड़फाड़ है। चावो तो गिनीज-बुक मांय नाम छपवावण सारू ई अप्लाई कर सको।''

है नीं गीरबैजोग बात। काम तो काम ई हुवै, कोई काम मैणत बिना पार नीं पड़ै। मन लगाय'र ईमानदारी सूं काम करणो चाईजै तो अै सगळा काम ई मैणत रा है अर थां हो कै सरमा मरो। जे यूं ई करता रैया तो कदैई आगै नीं बध सकोला। थांनै अैड़ा काम करणियां नै साबासी देवणी चाईजै... जिणां नै अै काम नीं आवै, उणां नै सिखावण सारू खेंचळ करणी चाईजै... सैयोग करणो चाईजै, सागै ई होडा-होडी गोडा ई फोड़णा है।

आधा-अधूरा गाभा वाळा / वाळियां... सै सूं बेसी गंदगी फैलावणियां... चोरी-जारी करणियां... कुतर्क करणियां आद री हूंस बधावण सारू मोटै जळसै मांय उणां नै साल ओढाय'र, माळा पैराय'र, प्रशस्ति-पत्र देवणो चाईजै। मीडिया वाळां नै चाईजै कै वै अैड़ै भव्य कार्यक्रम रो जोरदार कवरेज करतां थकां अखबार में सांतरी खबर देवै। छोटी-मोटी सगळी पत्रिकावां रो ई नाम हुवैला, जे वै अैड़ी महताऊ खबर छापैला।

जे आपां नै, आपणै गांव, कस्बै, स्हैर, प्रदेस अर देस रै सागै समाज रो सिरै विगसाव करणो है, संसार मांय देस रो नाम ऊंचो करणो है तो जिण बातां सूं सरम आवै, उण माथै गीरबो करणो सीखणो पड़ैला। जे औ सै सीख लियो तो सगळी अबखायां रै छातीकूटै सूं ई पिंड छूट जावैला।

तो भायां / बैनां / भायला / भायलियां! म्हैं थांरै अैड़ा मोटा-मोटा चूंटिया भरिया, पण म्हनैं ठाह है कै थांनै अबै ई सरम नीं आवैला।

◆◆

संस्था री कार्यकारिणी रा पदाधिकारी
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर में सदस्य मनोनीत

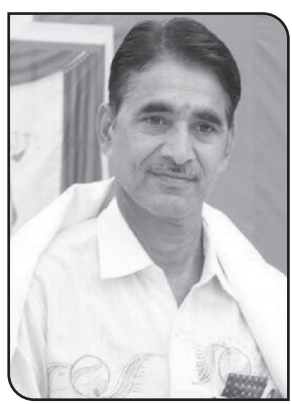

श्रीभगवान सैनी

पाण्डुलिपि प्रकाशन समिति सदस्य

मोकळी बधाई

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़
मरुभूमि शोध संस्थान, श्रीडूंगरगढ़
राजस्थली (लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही)
जूनी ख्यात (शोध री यूजीसी कैयरलिस्ट में सामल)

माणक तुलसीराम गौड़

बांसवाड़ा पछै उदयपुर रै बासै मांय रोट्यां री कबड्डी

दौड़, कूद, कुस्ती, कब्बडी अै इयांकला खेल है कै इणां मांय कीं ई तो सामान नीं लागै अर नीं कोई पईसो-टक्को। हींग लागै न फिटकड़ी रंग आवै चोखो। गांव मांय टाबरपणै मांय कबड्डी घणी-ई खेलता। कबड्डी खेलण वास्तै चाइजै फुरसत अर फुरती, वा रामजी री किरपा सूं बाळपणै में घणी ई ही। अबार री जियां किताबां अर कोर्स रो लादो उण वगत टाबरां माथै नीं हो। पछै चाईजै जग्यां। उण बगत गांव रा धोरा-मगरा अर मारग घणा चौड़ा हा। चावै जठै ई खेलो, कूदो, रमो। अबै तो मारग लोग दाब लिया। चौड़ा मारगां नै लोग गांव री गळ्यां बणाय दी। ओज्यूं चाईजै रमण वास्तै रेत। बेकळू रेत। गांव री धूड़। उण बगत रमण वास्तै धूड़ ई घणी ही, पण अबै कठै? धूड़ तो उडगी धोरां री अर गांव री ई। सेवट में चाईजै साथी-सायना। संगळिया। वै ई उण बगत मोकळा हा। सगळा घरां मांय पांच-पांच सात-सात टाबरिया तो होवता ई हा। अबार री जियां नीं हा कै अेक का दोय टाबर बस। इण वास्तै म्हैं गांव रा टाबर धाप-धाप'र सगळा ई खेल रमता, पण उणमें सब सूं घणी रमता कब्बडी।

उण बगत म्हैं म्हारी गांव री पोसाळ मांय पांचवीं में पढतो हो। पोसाळां रा टुर्नामेंट म्हारै गांव चूंटीसरा सूं दस किलोमीटर अळगै गांव भदवासी मांय होवता। उण बरस-ई होया। म्हैं म्हारी कब्बडी री टीम रै मांय हो। बठै म्हैं हर बरस कबड्डी खेलण सारू जावता हा। कदैई जीत'र आवता तो कदै ई हार रो लाडू हाथां में लेय'र आवता। उण बरस जीत'र आया अर गांव अर पोसाळ रो नांव ऊंचो करियो।

:: ठिकाणो ::
No. 247, II Floor,
9th Main, Shanti
Niketan Layout,
Arekere,
Bangalore-560076
Mob : 8742916957

 ISSN : 2320-0995

सन् 1968 में पढण सारू म्हैं म्हारै नानैरै गांव तीतरी-जोधियासी गियो। बठै री पोसाळ में कबड्डी रो घणो जोर हो अर धोरां-धरती होवणै सूं कबड्डी खेलण रो मजो ई कीं बेसी हो।

सन् 1971 में 'सेठ किशनलाल कांकरिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय' नागौर में आयां पछै स्कूल में कबड्डी खेलणो छूट गियो, पण छुट्टी हुयां पछै गांव आय'र वो ई धोरो अर वा ई कबड्डी। वै ई घोड़ा अर वै ई मैदान।

1974 मांय 'राजकीय महाविद्यालय' नागौर में भरती हुयां पछै कालेज में कबड्डी पाछी चालू होयगी ही। कला, वाणिज्य अर विग्यान रै विभागां मांय आपसरी टुर्नामेंट हुंवता। अंतरमहाविद्यालय टुर्नामेंट उण साल 1976 में 'बियाणी राजकीय महाविद्यालय' नाथद्वारा में होया। उण मांय म्हारी कालेज री टीम मांय म्हैं ई हो अर चोखो खेल दिखावण सारू नागौर जिला री जिकी ओपन टीम चुणीजी ही उण टीम मांय म्हारी कालेज रा जिका खिलाड़ियां रो चुणाव होयो उणां मांय म्हैं खुद, चंदगीराम जाट, अर्जुनराम काळा, हेमनाथ सिद्ध, चंपालाल रेगर हा अर नागौर री आई.टी.आई. रा तीन खिलाड़ी ई हा।

अबै म्हांनै 'अखिल राजस्थान कबड्डी प्रतियोगिता' में भाग लेवण सारू बांसवाड़ा जावणो हो।

17 दिसंबर 1976 रा म्हैं रेलगाडी में बैठ'र नागौर सूं ब्हीर होय'र मेड़ता रोड़, डेगाना, गच्छीपुरा, मकराना, कुचामण सिटी, नावां, सांभर होय'र फुलेरा पूगग्या। फुलेरा सिंझ्या री बगत पूगग्या हा। अठै म्हांनै गाडी बदळणी ही अर वा रात री ग्यारह बज्यां ही। घर सूं जिकी रोट्यां, साग, चूरमो लाया हा वै तो सगळां रा ई निवड़ग्या हा। अेक तो चढती उमर मांय भूख ई अणूती लागै। दूजा मांय कबड्डी रा खिलाड़ी, तीजो बैठा-बैठा म्हैं ओज्यूं दूजो काम-ई कांई करां अर चौथो औ कै खुंजै मांय खरची री रकम नान्ही ही, जिणनै च्यार-पांच दिनां तलक बचाय'र राखणी ही नीं जणै टेसण माथै खावण री चीजां री कांई कमी! गांव सूं साथै लायोड़ती रोट्यां रो तो धूंवो म्हे दीया-बाती री टेम होवतां नीं होवतां ई उडाय दियो हो। पछै मूंडो भिंच्यां म्हे सगला बैठ्या हा। अेक तो उत्तरादी डांफर चालू होयगी। दूजा में फुलेरा रो खुलो प्लेटफार्म अर ओढण-बिछावण नै रामजी रो नांव। म्हारै कन्नै फकत चादरां ई ही, उणां रो कठै पतो चालै उण डांफर में अर ऊपर सूं भूख ई जोरदार लाग्योड़ी ही। उण बगत केळा अेक रिपिया रा अेक दरजन आवता हा। म्हे सगळा जणां अेक-अेक दरजन केळा खाय'र रात काढी। अबार अेक दरजन केळा घरां लावां जदै सगळा जणां भेळा होय'र खावां तो ई नीं नीवड़ै।

रात री ग्यारह बज्यां गाडी आयगी ही अर म्हांनै जग्यां मिलगी ही। फुलेरा सूं अजमेर, नसीराबाद, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा, चित्तोड़गढ़, निम्बाहेड़ा, नीमच, मंदसोर होय'र

रात भर सफर कर'र म्हैं सूरज उग्यां रतलाम पूगग्या। वठै सू तांगो कर'र बस स्टैंड आया अर बस पकड़'र वठै सूं पिच्यासी किलोमीटर अळगै सहर बांसवाड़ा पूगग्या।

कबड्डी प्रतियोगिता रो स्थल बांसवाड़ा स्हैर सूं लगैटगै अठारह किलोमीटर आंतरै 'माही डेम प्रोजेक्ट' माथै हो। दोपहर तलक म्हैं वठै पूगग्या। टीमां रै ठैरण, न्हावण, धोवण अर जीमण री सांतरी व्यवस्था करियोड़ी ही। उण दिन तारीख ही 18 दिसंबर 1976।

दूजै दिन यानी कै 19 दिसंबर सूं टुर्नामेंट चालू होयग्या हा। तीन टीमां नै हराय'र म्हे तीजै राउंड में पूगग्या। वठै म्हारो मुकाबलो श्रीगंगानगर सूं होयो अर म्हैं दोय पोइंट सूं हार टुरनामेंट सू बारै होयग्या, पण कबड्डी रो सांतरो खेल दिखावण मांय म्हैं अर म्हारी टीम कीं पाछ नीं राखी। च्यार मैच खेलण रै पछै म्हांरा डील जग्यां-जग्यां सू छुलग्या हा, हाथां री खुण्यां अर पगां रै गोडां माथै चात्यां चेप्योड़ी देख'र कोई ई कैय सकै हो कै म्हे कबड्डी खेल'र आया हां या हल्दीघाटी सूं जुद्ध लड़'र।

जिण बगत म्हैं मैच हार'र टुर्नामेंट सूं बारै हुया उण दिनां 'महबूबा' नांव री अेक फिलम रिलीज होई ही, जिणरो गीत घणो जोर सू लाउडस्पीकर माथै बाजै हो :

मेरे नैना सावन भादो
फिर भी मेरा मन प्यासा।

हारयोड़ां रा म्हांरा नैण सावण भादो ई होय रैया हा।

बांसवाड़ो स्हैर आदिवासी खेतर रै मांय बस्योड़ो घणो सांतरो अर महताऊ स्हैर है। बिरखा सांतरी होवणै सूं हरियाळी ई चोखी ही। आम्बां रा गाछ ई घणा दिखै हा। उण बगत विकास रा न्यारा-न्यारा काम चाल रैया हा। इमरजेंसी लाग्योड़ी ही अर राजस्थान प्रदेस रा मुख्यमंत्री हा—माननीय श्री हरिदेव जी जोशी।

चंबल नदी माथै माही डेम रो निरमाण अर विस्तार रो काम चालू हो। माही डेम घणो महताऊ होसी। इण सूं बांसवाड़ा जिलै री धरती नै सींचण अर लोगां रै पीवण नै पाणी री व्यवस्था होज्यासी।

उण बगत घूमण, फिरण अर देखण सारू उदयपुर रो नांव घणो ख्यात हो, जिको आज ई है। अर आ ई ठा ही कै बांसवाड़ा सूं उदयपुर फकत अेक सौ पैंसठ किलोमीटर आंतरै है। म्हैं म्हारै कोच साहब सूं अरज करी कै कीं ई होय जावै, पण म्हांनै उदयपुर देखणो ईज है। वै कैयो कै खरचो लिमिटेड है। उदयपुर दिखाय सकूं, पण थांनै खरचै री भरपाई करणै वास्तै फकत अेक बगत ई जीमण नै मिलैला। म्हे सगळा जणां इण बात नै मंजूर करली अर बस सूं पांच घंटा लाग्या। म्हैं सगळा जणां बांसवाड़ा सूं उदयपुर आयग्या।

उदयपुर रो बस-स्टैंड उदियापोळ रै कनै ई है। वठै सूं पैलां म्हैं गुलाबबाग देखण वास्तै गिया जिको फकत आधा किलोमीटर अळगो है। गुलाबबाग नै सज्जन निवास ई

कैवै है। बतायो गयो कै आदरजोग स्वामी दयानंद सरस्वती जी आपरी महताऊ किताब 'सत्यार्थ प्रकाश' अठै बिराज'र लिखी ही। गुलाबबाग घणो मोटो बाग है जठै हर तरियां रा रूंख अर गाछ है। हरियाळी जोरदार ही अर रूंखड़ा ई घणां घेर-घुमेर छायादार हा। बाग रै बिचाळै घणी मोटी अर महताऊ लाईब्रेरी है जिणरो नांव 'सरस्वती पुस्कालय' है। जिण मांय हजारूं किताबां हर भासा री पढण वास्तै मिलै।

गुलाबबाग रै कनै ई पिछोला झील है, जिणनै राजा-महाराजा देखणजोग बणाई है। उण बगत झील में पाणी छौळां खाय रैयो हो। मांयनै नावां चाल रैयी ही। पिछोला री छौळां देख'र राजस्थानी रो औ मीठो अर मौजी गाणो म्हनैं याद आयग्यो हो :

पिछौला झाला देवै सा, ओऽ बाऽऽलमा।
समदरियो झाला देवै सा, ओऽ बाऽऽलमा।

साच्याणी रै मांय वा ही तो झील, पण किणी समदरियै सूं कमती नीं ही। क्यूं कै समदर रै बारै मांय म्हैं सुणियो तो हो, पण देखियो नीं हो। म्हैं तो देखी म्हारै गांव री नाडी जिकी री तुलना में तो आ झील समदर ई है। झील रै मांय दोय मोटा-मोटा महल बणियोड़ा है। अेक रो नांव 'जगमिंदर' अर दूसरै रो 'लेकपैलेस'। दोन्यूं ई अपणै आप में देखणजोग। सरावणजोग। राजस्थान रा ताजमहल।

वठै सूं तांगो कर'र म्हे सगळा जणां फतहसागर झील माथै आयग्या। आ झील ई देखणजोग है। इण झील रै कनै महाराणा प्रताप रो स्मारक ऊंची टेकड़ी माथै है जिणरो नांव है—'मोती मगरी'। मगरी रै माथै चढियां पछै आगै महाराणा प्रताप री घणी लांठी अर फूठरी मूरती चेतक घोड़ै माथै बणियोड़ी है। हाथ मांय भालो। मूंडै माथै वो ई रूबाव, वा ई मरोड़ अर वा ई मठोठ। कोई जाणै अबार मूंडै सूं बोल पड़सी। आ मूरती देख'र औ गाणो मत्तै ई होठां आय जावै :

ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े
तुझ पर सवार है जो, मेरा सुहाग है वो
रखना रे... आज उसकी लाज होऽऽ

अै इतरी देखणजोग जाग्यां देखतां-देखतां दोपारां री तीन बजगी। भूखां मरतां रै पेट मांय ऊंदरा थड़ी मचावै हा। पांवडो-दोय पांवडा चालणां ई दोरा होयग्या। म्हैं म्हारै कोच सूं अरज करी कै का तो अबै म्हांनै रोटी जिमाय द्यो का पछै महाराणा प्रताप रै स्मारक रै कनै ई म्हांरी समाधी चिणवाय द्यो।

आ बात सुण'र कोच साहब हंसण लागग्या अर वठै सूं तांगो कर'र म्हे हाथी पोळ आयग्या। रोटी वास्तै पूछताछ करी तो ठा पड़ी कै अठै सामनै ई अेक बासो यानी कै भोजनालय है। उण रो नांव है—'जनता भोजनालय'। वठै सस्ती रेट सूं खाणो मिलै। म्हैं वठै गिया अर पूछताछ करी।

बासै रौ मालिक बोल्यो, ''इयां तो म्हे तीन बज्यां जिमावणो बंद कर दिया करां हां अर सिंझ्या री त्यारी करण लाग जावां। पण थे बो'ळा जणा हो। यानी कै दस जणा हो, सो दाळ तो पड़ी है। अेकै कानी अबार साग छमक देस्यां अर दूजै कानी रोट्यां बणावणी चालू कर देस्यां। थे फगत पंदरै मिनट बैठो सा।''

जणौ कोच साब कैयो, ''आप तो थाळी री रेट बतावो सा।''

''जनता थाळी री रेट सवा रुपियो है, जिण मांय अेक साग अर रोट्यां आसी भरपेट। स्पेशल थाळी में साग, दाळ, चावळ, रोटी, दही, पापड़, चटणी, सलाद अर अचार मिलैला, जिणरी रेट है फगत डेढ रुपियो।''

हिसाब लगाय'र कोच साहब कैयो, ''जावण दै थारी स्पेशल थाळी नै। तूं तो दस जनता थाळी लगा। छोरां रा भूखां मरतां रा जीव निकळ रैया है। अेक-दोय कम होयग्या तो इणां रा माइत म्हारी टाट कूट नाखसी। आगै ई माथा में रूंगता फगत टाट रै लारै-लार ईज बच्योड़ा है।'' इतरो कैय'र कोच साब जीमण री टेबल-कुरसी माथै बैठग्या।

जीमावण वाळा आप-आपरै काम-धंधै में लागग्या।

म्हे सगळा जवान हाथ-मूंडा धोय'र सूड़ काटण नै त्यार होय'र बैठग्या। बैठ्या तो कांई हा, रसोवड़ै कानी तकै हा। सराधां में कागला खीर-पूड़ी नै तकै जियां।

म्हे सगळा जणा सज-धज'र टेबल-कुरसी माथै बैठ्या हा। अेक-अेक पल अेक-अेक घड़ी जियां लखावै ही। रोटी री कीमत कांई होवै आज ठा पड़ी। लोग अन्नदान नै सै सूं मोटो अर महताऊ दान क्यूं कैवै, वा ई ठा पड़ी। आपां रा बडेरा अन्न रै अेक-अेक दाणै नै क्यूं संभाळ'र राखता हा, आज म्हारी समझ में आयगी। जीमती बगत आपां अेंठवाड़ो छोडां जिणनै बडेरा पाप क्यूं बतावै, वा ई ठा पड़गी। पेट नै पापी क्यूं बतायो गयो है, आज समझ में आयगी। भूखां नै सुपनै में रोटी क्यूं दिखै अर नींद में रोटी रा सुपना क्यूं आवै, सगळी ठा पड़गी। म्हारा बापूजी म्हारै पूरै परिवार नै छोड'र नागौर सूं नेपाल नौकरी करण वास्तै क्यूं जावता हा, अबै म्हनैं समझावण री गरज नीं है।

इयांकला सुपना बुणतां-बुणतां आधी घड़ी बीतगी, ठाह ई नीं पड़ी। इयां ई आपां री जिंदगाणी जाय रैयी है। मुट्ठी में भरियोड़ी बाळू रेत जावै अर आपां नै ठाह ई नीं पड़ै जियां।

इतणै मांय बासै रो मालिक आय'र कैयो, ''पैली रोटी उतरगी है। थे जीमणो चालू करो।''

कोच साब कैयो, ''जीमणवाळा घणा हां। थे पांच-पांच कर'र जिमाय द्यो, ठीक रैसी।''

''साब, आप तो पैली बार पधारिया हो। म्हांरै तो औ रोज रो काम है। आप तो सगळा जणा अेकै साथै अरोगो सा। म्हे तीन भाई हां, अबार जीमाय काढस्यां।''

साग-दाळ पैलां ई थाळी में परोस्योड़ा हा। रोटी माथै रोटी आवै ही। दस मूंडा अेक सरीखा चालै हा अर रोट्यां होम स्वाहा होवै ही। रोटी तो थाळी में पड़तां ई उडै ही। कोई जाणै तप्योड़ै तवै माथै पाणी रो छांटो ई पड़्यो है। कोई अेक फलकै रा दोय-दोय टुकड़ा कर रैया हा तो कोई पूरो फलको ई अेकै साथै मरोड़ै हा। म्हनै कांई ठा कांई जची जिको म्हैं फलका गिणै हो। तीस-तीस फलका आया जित्तै उणां रो ओसणियोड़ो आटो निठग्यो हो। बासै रो मालिक अरज करी, ''बस, पांच मिनट ठहरो। अबार ओज्यूं आटो ओसण'र पाछी रोट्यां चालू कर देस्यां।''

म्हे बैठ्या उडीकै हा। आं तीस-तीस फलकां सूं म्हारै कीं ई सांधो नीं लाग्यो हो। पेट तो लपसां जाय रैयो हो। इतणै मांय फलका पाछा आवणा चालू होयग्या। पूरी टीम रै मांय खावण में सब सूं माड़ो म्हैं हो अर म्हारी गिणती 'हाफ सेंच्यूरी' यानी कै पचास पर आयगी ही। इतणै मांय ओज्यूं अेक माड़ो समाचार आयो। ओसणियोड़ो आटो फेरूं खतम होयग्यो। आटो भळै ओसणीजै है।

रोट्यां री तीसरी पारी सरू होयगी ही। पोवणियां नै थकैलो आवै हो अर जिमणियां नै जोस। अबकै कैया करै है कै धाप'र माड़ा समाचार आया। समाचार कांई हा, आ तो सुणावणी ई ही। बासै रो मालिक आय'र कैयो, ''भाईसाब, माफी चाऊं। पींपै रो सगळो आटो ई निवड़ गियो है। अबै म्हारै सूं कीं-ई कारी नीं लागै। कैया करै है कै जीमता मिनखां नै कदैई भूखा नीं उठावणा, पण कांई करां, मजबूरी है।'' वो हाथ जोड़्यां ऊभो हो, अपराधी रै जियां।

कोच साब कैयो, ''सवा रुपियै में भरपेट जीमावण री बात ही। इयां-कियां होय सकै?''

जदै वो घणी निमळाई सूं कैयो, ''आप, साव साची फरमाय रैया हो बापजी। सवा रुपियै थाळी री ईज बात ही। थे च्यार आना कमती देवो अर म्हांनै माफ करावो सा...।''

उण बगत म्हैं साठ रनां माथै यानी कै साठ फलका अरोग चुक्यो हो। कोई-कोई नब्बै माथै नोट आउट हा। म्हांरी टीम रो कप्तान नाबाद सेंच्यूरी मार चुक्यो हो। जिका साब नै म्हैं जीमण में पोचा समझता हा वै ई सेंच्यूरी रै लगैटगै हा।

अेक रिपियै री थाळी माथै मैच ड्रा होयग्यो हो। बासैवाळै री मजबूरी साम्हीं लखावै ही। म्हैं उणां नै धिनवाद देय'र वठै सूं निकळग्या।

लारै सूं बासै रो मालिक हाक लगाई, ''अरे, सुणो हो। जावता-जावता औ तो बतावता जावो कै थांरो गांव किस्यो है?''

म्हे अेकै साथै ई बोल्या, ''मारवाड़ में नागीणो। यानी कै नागौर...।''

उदयपुर सूं पाछा आवती बगत रिजरवेसन करवाय'र कोच साब तो रेल रै स्लीपर कोच में जाय'र सोय गिया अर म्हे सगळा खिलाड़ी जनरल कोच में फगत बैठण री जग्यां

मिलण वास्तै सारी रात कबड्डी खेलै हा। बैठणो छोड'र सावळ ऊभा रैवण नै ई जग्यां नीं मिली। दोरा-सोरा रात भर सफर कर'र म्हे दिनूगै फुलेरा पूग्या। वठै सूं फुलेरा सूं बीकानेर जावण वाळी पैसेंजर गाडी में बैठ'र नागौर कानी टुरग्या।

रस्तै में गच्छीपुरा टेसण आयो। वठै म्हारी मोटी बैन पार्वती परण्योड़ी है। वा कैवत है नीं कै 'बैन रै भाई अर सासरै जंवाई रा घणा कोड होवै।' कदैई भाई नै ई बैन रै वास्तै वो ई हेत अर उमाव दिखावणो चाईजै। आ सोच'र साथीड़ां सूं विदा लेय'र म्हैं बहन सूं मिलण सारू वठै ई उतर गियो। दूजै दिन इतवार री छुट्टी ही।

म्हनैं चाणचक आयोड़ो देख'र बैन घणी हरखी। उणरै मूंडै माथै आयोड़ा भाई सूं मिलण रा हरख रा भाव, मुळक अर उमाव दरसातो उणियारो देख'र म्हारी हफ्तै-भर री थकान, डील री पीड़ अर कबड्डी खेलतां जिका खुण्यां अर गोडा फूट्या हा, सो-कीं ठीक होयग्या अर मन में जिको हार रो भार कुंडली मार्‌यां बैठ्यो हो वो ई हेठै उतरग्यो। अेक रात बैन कनै जी भर'र हथाई करी अर दूजै दिन गांव चूंटीसरा पूग्यो। इण तरियां इण जात्रा रो समापन हुयो।

◆◆

अरविंद सिंह आशिया

तीरथ

अंधारी रात में मिनख अर मिनख रो जायो नीं दीसै। नदी रै दोई कानी नींबड़ा अर बड़ला अंधारै में भूत ज्यूं दीखै। च्यारूंमेर सौपो। आपरै खुद रै काळजै री धड़कण आपनै सुणीजै। कठैईक सिंयाळिया रो रोवणो अर सागै ई कुत्तां रो भुसणो सुणीज जावै। सांझ ढळियां बाद लोग अठीनै सूं निकळता डरै। कोई सित्तर-अस्सी बरसां पैली कैवै कै कस्बै रै छोगो बा री बहू नै भूत लागग्यो हो। तद खारची सूं गुरांसा नै बुलाया हा तगजी दाता। गुरांसा आधै दिन तांई केई मंतर कीधा अर बाकळा च्यारूंमेर फेंकता गिया। कैवै कै पूर दोपार व्हैतां छोगा बा रा घर सूं अेक काळो भुसंड राती आंख्यां वाळो सातेक बरस रो छोरो झपाटो देय'र बारै निकळियो। साव नागो। डील माथै सूत रो रेसो तकात नीं वो सीधो नदी रै ढावै कानी न्हाटो।

साच-झूठ तो रामजाणै पण बुजरग कैवता कै गुरांसा लारै न्हाटा। सो धकै-धकै तो वो काळौ अबोट अर लारै-लारै गुरांसा... सो सेवट नदी रै दूजी कानीं चढतां वो फंदन में आयग्यो अर गुरांसा बठै ई बीं नै बोतल में घाल'र दो हाथ ऊंडो जमीं में गाड़ दीधो। तद सूं छोगो बा री बहू तो ठीक होयगी पण कोई टैम-बेटैम नदी रै बीं ढावै निकळतो तो वेळा-वचूक होय'र मांदो पड़ जावतो। गुरांसा तो नीं रिया। बात नै सित्तर-अस्सी बरस बीतगा पण आज भी मिनख बठी सूं नीकळता ध्यान ई राखै ।

बीं दिन भी सांझ हुंवतां ई च्यारूंमेर सौपो पड़ग्यो हो। अंधारपख होवण सूं कोई रोशनी नीं। रात इत्ती अंधारी कै मिनख

:: ठिकाणो ::
DD 14, Tigerhills
Udaipur (Rajasthan)
Mob : 9413318066

ISSN : 2320-0995

अर मिनख रो जायौ नीं दीसै। नदी रै दोई कानी नींबड़ा अर बड़ला अंधारै में भूत ज्यूं दीखै। च्यारूंमेर सौपो। आपरै खुद रै काळजै री धड़कण आपनै सुणीजै। कठैईक सिंयाळिया रो रोवणो अर सागै ई कुत्तां रो भुसणो सुणीज जावै। जितरेक तो कीं सगसगाट सुणीजी, जाणै कोई हळफळायो आदमी नदी रै इण कानी आय रियो हुवै। अंधारै में ओ हळफळायो आदमी चंपौ चोर। गाम में दसवीं फेल, पण चोरी में बीए पास। चंबल रै ढावां मांयलै जिल्लां रो रैवणियौ। अचूक चोर। आज तांई को पकड़ीज्यो नीं।

दिन में रैकी करणी, वड़ी-मजूरी करणी, कमठां माथै काम करणौ अर मौको ताड़'र किणी महाजनां रै कै पईसावाळां रै घरां हाथ साफ करणो। चोरी रै पछै ई पण कींक दिन मजूरी माथै आवतो जिणसूं कै किणनै ई शक नीं हुवै अर पछै कीं उत्तर टाळ'र वुओ जावतो। लोगां नै औ पत्तो कै कोई टणको चोर है... जको कै ताळा तोड़ण में उस्ताद है... पण चंपौ ईज चोर है औ किणनै ई भणकारो तकात नीं ।

अबकै चंपो मजूरी करण नै गोडवाड़ जाय पूग्यो। राजस्थान रै इण गोडवाड़ इलाकै में जैन समाज रा बडा-बडा सेठिया रैवै। आंरा मोहल्ला रा मोहल्ला बंद हवेलियां सूं अटियोड़ा। सगळा ई बारै सूरत-बंबोई धंधो करै, सो हवेलियां बंद। कोई सेक घर में कोई बूढो-ठाडो रैवो तो भलांई। चंपो दिन में कमठा माथै काम करै अर सांझ पड़्यां अठी-उठी फिरै। सेवट उण अेक घर ठाय लियो मांयला बास में। मांयनै गळी में सगळा घर बंद अर छेहलो घर पुराणी हवेली पांचसौ गज री प्रवीणभाई दागीणावाळा री। बंबोई में टणको धंधो सोना-चांदी रो जवेरी बजार में। कदेई छठै चौमासै आवो तो आवो नींतर कदेई गोडवाड़ कानी मूंडौ ई नीं करै।

चंपो देखभाळ नै वा हवेली टाळ ली। अबै फिरतो-घिरतो तूमार राखै कै कठीनै सूं बड़णो अर कठीनै सूं पार बोलणो। पौ-माघ रा दिन आयग्या। लारला छह महीनां सूं चंपो रैकी सूं मोटामोटी अजै तांई सब समझग्यो हो। सियाळै रै दिनां कस्बा भी बेगा ई सूय जावै। खाली बस-स्टैंड कै पान रा गल्ला अर चाय री होटलां माथै नव-दस बजियां तांई चाळचोळ रैवै। पछै सौपो पड़ै इसो कै रात गियां ई मिनख ऊठै।

अमावस री रात कैवै कै चोरां सारू ऊजळ रात हुवै। तरकीब सूं आधीक रात ढळियां चंपो बिनां पग बजायां ठेठ हवेली नैड़ो पूग गियो। खासी देर अेक खंधियै रै पसवाड़ै ऊभो रैय'र गोह रै ज्यूं भींत कूद'र मांय बड़ग्यो। माचिस री तुळी बाळ'र छिनोक ऊजाळो करियो। पायजामै रै मांय अटकायोड़ी रॉड़ काढ'र कमरा रा मांयला दरवाजा उभेड़िया सो बै तो झबकै ई खुलग्या। मांय तिजूरी देख'र चंपा रै जाणै डील में बिजळी वापरगी। वो बीसेक मिनट आफळियो अर तिजूरी खुलगी ।

तुळी बाळतां ई फेरूं छिनौक उजाळो हुयो। तिजूरी में अेक पीळो बुगचो जिणमें सोनै रा सिक्का कोई सौ अेक। चंपै री आंख्यां फैलगी। बीं रै साम्हीं गाम रो पक्को घर, लुगाई टाबरां रै नूंवा गाभा, बढिया स्कूलां, सब आंख्यां साम्हीं सूं निकळी। वो लप करतो थैली उठाई अर अेक प्लास्टिक में लपेट'र आपरै पायजामे रै नाड़ै सूं बांध'र मांयलै कानी सिरकाय दी।

जितरेक तो बारै हाको सुणीज्यो—चोर! चोर!!

चंपो तो बांदरै ज्यूं फदाकतो नाळ चढ'र मेड़ी माथै लारला घर री छत अर बठै सूं पाड़ौस री गळी में कूद'र न्हाठो। कुत्ता जाग'र भुसण लाग्या। हाका सुणीज्या। दो-च्यार मोट्यार भेळा भी हुया पण चोर कठैई निगै नीं आयो। थोड़ी देर अठी-उठी गिया भी। कीं तोजो नीं जम्यो। सगळा आप-आपरै घरां जाय'र गूदड़ां में बड़ग्या।

चंपो गळियां पार करतो तीर रै ज्यूं नदी कानी न्हाठो, सो नदी रै बीं कानी जाय'र ढब्यो। चारूंमेर सांय-सांय। घोर अंधारो। चंपो छाती री धूंकणी नै ढाबी। माचिस काढ'र अठी-उठी जोयो। सड़क रै पसवाड़ै लाग्योड़ा बड़लां री लैण में अेक पीपळ ऊभो। चंपो फटाफट ढूको सो देखतां-देखतां तीन हाथ ऊंडो पीपळ रै लारली कानी खाडो खोद दीधो। पछै अठी-उठी जोय'र झटकै ई नाड़ै में बंधियोड़ो सोना रा सिक्कां रो बुगचो काढ्यो अर खाडा में न्हाख'र पाछो अदेर बूर दीधो। अैड़ो सफाई सूं काम कीधो कै कोई देखलै तो ई ठाह नीं पड़ै कै अठै कोई खोदाखादी हुई भी है कै नीं।

काम निपटाय'र चंपो पाछो नदी रै इण कांनी आय'र बीड़ी काढी अर कै मूंडै माथै आगै सूं टॉर्च री भळभळाती लाइट पड़ी। दो कांस्टेबल गश्त माथै हा, ज्यांनै वो संदिग्ध निगै आयग्यो। वां दिनां इलाका में अपराधां री गूंज रै चालतां अेस.पी. साब अेक भूपसिंह नाम रा थाणेदार नै लगाय राख्यो हो... बीं कड़क आदेश देय राख्यो हो कै भलांई अेमदिया री टोपी मेमदिया माथै मेलणी पड़ै पण जको भी संदिग्ध दीसै उणनै मांय पजाय द्यो। चंपो इण बार झिलग्यो। केई दिनां रेल अर हवाईजहाज बणी उणरी। छोटी-मोटी चोरियां कबूली पण सोनै रा रुपियां वाळी थैली बीं होठां माथै नीं आवण दी जो नीं'ज आण दीधी। सात बरसां सारू चंपो मांय होयग्यो। बीं नै जिला मुख्यालय री जिला जेळ में शिफ्ट कर दीधो।

दिन निकळतां देर नीं लागै। अेक दिन सात बरस भी बीतगा अर चंपो बारै आयग्यो। डाढी बधियोड़ी, बाळ अळूझयोड़ा। जेळ प्रशासन कनै कोई पुराणा भगवां गाभा पड़्या हा... वै मांग'र पैर लीधा अर बीं सौगन लेय ली कै अब सगळा फोगट धंधा छोड'र गांव जाय'र खेती करणी। पण सबसूं पैली तो वा सोना रा सिक्कां री थैली काढ'र कब्जै करणी।

अै वै दिन हा जद राममिंदर रो आंदोलन देस में जोर पकड़्यो हो। जगै-जगै लोग धरम जागरण करण लाग्या हा। चंपो बस पकड़'र कस्बै पूग्यो। बस-स्टैंड माथै चाय पीय'र पगां-पगां नदी कानी चाल्यो। नदी रै बीं कानी पूग्यां तोतक दूजो ई दीस्यो। पीपळ खासो बडो पेड़ बणग्यो हो। बीं रै च्यारूंमेर चौंतरो बण चुक्यो हो। पीपळ रै गोड रै केई मोळियां अर सूत रा धागा लपेट्योड़ा। जड़ां में तीन चार गणेशजी अर हड़मानजी री मूरतां मेल्योड़ी। कनै ई अेक कुटिया बणियोड़ी जिणमें अेक आंधा म्हाराज रैवै। लुगायां बरत-बडौलिया करै अर पीपळ पूजै। पक्की सड़क बणण सूं मिनखां रो फरणेट बधग्यो। चंपो तो चकरबम होय'र बठै ई बैठग्यो। अबै कांई करणो रैयो!

चंपो कुटिया में आंधा म्हाराज कनै गयो... बीं आपरो परिचै दियो कै रमतो जोगी हूं अर हिमाळै कानी सूं आयो हूं । थोड़ाक दिन ढबणो है। आंधा म्हाराज भी किसा म्हाराज हा। भेख ओढ'र दिन काढता हा कै रोटी टैम पर मिळज्या। सो वां देख्यो कै अेक सूझतो सागै रैसी तो आंधै री गाडी सोरी गुड़कसी। कस्बै में भी बात खिंडगी कै नूंवा म्हाराज आया है। बात नै दिन बीतण लागा। चंपो कुटिया संभाळ लीधी। सुबै-शाम दीवा बत्ती करणी। पीपळ रै नीचै मेल्योड़ी मूरतां री पूजा करणी। मंगळ शनि नै झाड़ो ई नाखण लाग्यो।

म्हारा कलेक्टर साब अेकर कह्यो कै जे प्रशासन कनै मिनखां री अबखायां रो तोड़ हुवतो तो घणखरा मिंदर जावणो बंद कर देंवता। बात सौ टका साची। सौ मांयनै सूं सित्तर तो आपरी समस्या अर काम लेय'र ई मिंदर जावै, बोलमा करै अर काम हुंवतां ई परसादी करै। सो नूंवा म्हाराज कनै सूं झाड़ो नखाण नै मिनख आवण लागा । अठीनै चंपो सिंगल टार्गेट माथै। बीं रै रंडी रो जीव हंडी में। वो रोज तौजो जमावै कै नेक्स्ट प्लान कांई?

बीं नै लागग्यो कै चौंतरो तोड़णो तो संभव नीं है। सो बीं अंदाज लगायो कै कुटिया सूं पीपळ बीस-पच्चीस फुट आगी अर पीपळ सूं आठ दस फीट आगी सड़क...। बिचै केई झाड़का। सो जे किणी झाड़का सूं पीपळ तांई सीर करां तो रुपियां री थैली तांई पूगीज सकै। कुटिया में पड़िया गैंती फावड़ा नै काम मिलग्यो। आधी रात गियां पछै वो काम सरू करतो। कुटिया रै बारै पांचेक फुट आगै गैरै झाड़कै सूं पीपळ तांई सीर खोदण रो। पैली तो छव फुट ऊंडो खाडो खोदियो अर पछै धीमै-धीमै सीर खोदणी सरू कीधी पीपळ कानी। बारै निकळती टैम वो खाडा नै झाड़कां सूं ढक देंवतो सो किणी नै अभरोसो नीं हुवै।

तीस दिनां में पीपळ री जड़ तांई सेवट चंपो पूगग्यो। आंधा म्हाराज केई वेळा पूछता कै 'राते सिध गिया हा म्हाराज?' तो चंपो पडूत्तर देंवतो कै 'अधरतियो' ध्यान करूं बापजी!' बिचारा आंधा म्हाराज तो खुद जूण काटै, सो कांई कैवै।

 ISSN : 2320-0995

वो दिन आयग्यो जद खोदतां-खोदतां सीर बठा तांई पूगी। धूड़ में औखूंड्योड़ी सिक्कां री थैली। चंपो होळैसीक उठाई। प्लास्टिक रै कारणै ही जिसी ई पड़ी ही, नींतर स्यात् फाट'र बिखर जावती। थैली लेय'र पाछो सिरकतो चंपो बारै आयग्यो। खाड नै झाड़का अर धूड़ै सूं बूर'र कुटिया में आय'र सूयग्यो।

''आयगा म्हाराज ध्यान कर'र?'' आंधा म्हाराज रोज वाळो सवाल कीधो?

''हां बापजी।'' कैय'र चंपो कांबळ ओढ ली। थैलो आपरै कांबळ मांय।

इब चंपो बारै कम ईज निकळतो। सिंझ्यां मूरत्यां री आरती री टैम भी बीं रो ध्यान कुटिया कानी ई रैवतो। चंपा नै ध्यान हो कै अेकदम गायब हुंवतां ई मिनखां नै लागसी कै अचाणचक कठै गयो? जावता ठंड रा दिनां में मावठो हुवै। सो चार दिनां सू सूरज नीं निकळ्यो अर पाणी जोरदार बरसै। कोई बारेक बजियां दिन में बरसतै मेह में चंपा री निजर नदी रै उण कानी पड़ी। दस बारै जणा। कोई दाग देवण नै आयोड़ा। नदी रै उण ढावै कस्बो अर मसाण हा अर इण ढावै बड़ला-पीपळ रा झुंड अर कुटिया। मसाण कांई नदी रै ढावै दाग देवण री आधेक बीघै खण री खुली जग्यां। कोई दाग हुंवतो तद पैली टैक्टर भर'र काठ लाईजतो अर पछै वठै ई जग्यां देख'र चिता चुणीजती अर दाग दीरीजतो।

मेह रा दिनां में काम माड़ो होय जावतो। यूं कैवै कै मसाण री आग नै शिव रो वरदान है कै वा बरसात सूं नीं ढबै पण कैवतां आपरी जगै ।

''म्हाराज, कीं क झूंझळी कै सूखी लकड़्यां हुवै तो दीज्यो।'' बारै सूं सुणीजियो।

चंपो बारै आयो, दो जणा आखा भीज्योड़ा।

''के होयो?'' चंपो ढावै रै बीं कानी निजर नांखतो बोल्यो।

''जतना बाई रो बारह-तेरह बरस रो छोरो चालतो रैयो।'' अेक बोल्यो।

''बापड़ी विधवा लुगाई, अेकूको टाबर।'' दूजोड़ो निसांसो छोड़तां कैयो।

चंपो बां रै सागै बठै तांई झूंझळी अर दो सूखा काठ पुगाया। खांधियां कीं'क छतरियां लियां। दो-अेक जणा अरथी माथै छतरी कर राखी, पण तोई पाणी सूं भीज्योड़ी।

टाबर जाणै अबार आंख्यां खोल'र ऊभो होय जासी।

ज्यूं त्यूं दाग हुयो। चंपो पाछो कुटिया में आयग्यो।

''म्हारो छोरो देवो भी इत्तो ई बडो होयग्यो हुवैला। रतनी कीकर संभाळती होसी!'' चंपो आज बीं टाबर री लाश देख'र थोड़ो अणमनो होयग्यो हो। काल बेगो ई निकळ जास्यूं । बीं आपरै रुपियां आळी थैली नै बनियान रै मांय लटकाय ली। ऊपर सूं वो ईज भगवां चोळो-पायजामो अर बंडी। सुबै इग्यारह-बारह बजियां आंधा म्हाराज नै कैयो, ''बापजी, तीरथ रो मन है सो जावूं। पांच-सात महीनां में पाछो आय जावूंला।''

बस-स्टैंड सूं सीधी जिला मुख्यालय री बस लीधी अर व्हीर होयग्यो पण आखै रस्तै उणनै उण टाबर रो मूंडो दीसै... मेह में भीजतो। बीं रो मन रैय-रैय'र पाछो घिरै। जिला मुख्यालय पूग्यां सांझ ढळगी।

''बच्चा, एक खाली कागज और पेन मिलेगा?'' चंपो अेक चाय री दुकान वाळा नै कैयो। बीं दुकानदार म्हाराज जाण'र देय दियो। चंपो बीं कागज माथै कीं लिख'र खूंजिया में मेल दियो।

दूजै दिन कलेक्टर साब रै बंगलै री भींत रै कनै अेक थैली मिली। ज्यूं ई गार्ड री निजर पड़ी, बीं साब नै बतायो। कोई संधिग्ध वस्तु हो सकती है...! आनन-फानन में गार्ड अर पुलिसवाळा भेळा होयग्या। कलेक्टर साब खुद गाउन पैरियोड़ा चप्पलां पगां में घाल्यां बठा तांई आयग्या। जाबतै सूं थैली खोली। कांस्टेबल दीनानाथ बोल्यो, ''सर! इसमें तो सोने के सिक्के हैं।''

सगळा अचूंभै में पड़ग्या।

''...साथ में एक कागज भी है सर।'' कैवतां दीनानाथ अेक कागज कलेक्टर साब कानी बधायो।

''साब, पालड़ी में एक पतरे वाला श्मशान बनवा देना इन पैसों से...'' कलेक्टर साब दो-तीन वेळा बांच्यो।

'यह थैली, रिपोर्ट दर्ज कर ट्रैजरी में जमा कराओ और हां ये पालड़ी जिस तहसील में आता है वहाँ के पी.डबल्यू.डी. के चीफ इंजीनियर को मेरे ऑफिस भेजो, आज ही।''

कैय'र कलेक्टर साब पाछा बंगलै कानी मुड़ग्या।

उठीनै चम्पो जाणै सगळा तीरथ कर'र फारिग होयग्यो हुवै ज्यूं नैछै सूं पाछी राजधानी कानी री बस पकड़ चुक्यो हो—मजूरी सारू।

◆◆

उर्मिला माणक गौड़

नाक री सळ

काळू री बीनणी आपरी सासू रो मान-सम्मान कीं कमती ईज राखती ही। सासू काम करती अर बीनणी सा कीं न कीं बहानै सूं पलंगां पोढ़ी रैवती ही। आज ओ दुखै, आज वो दुखै। रोटी-बाटी ई कीं ढंग सूं नीं देंवती, पण सासू लाण स्याणी ही। चुपचाप आपरो काम करती रैवती अर सोचती कै ऊपर वाळै नै जियां मंजूर है वो बियां ई राखसी।

बगत आयां बीनणी रो भी बेटो परणीज्यो अर उणरै ई बहू आई। वा आपरी सासू री अेक-अेक हरकत माथै ध्यान राखती अर उणरी ई पगडांडी अर वो ई मारग पकड़ लियो।

काळू री बीनणी समझगी कै अबै आं तिलां में तेल नीं है। जे म्हारी बीनणी सूं सेवा करवाणी है तो पैली म्हनैं म्हारी सासू री सेवा करणी पड़सी। नीं जणां वा ई सासू वाळी ठीकरी त्यार है। होळै-होळै काळू री बीनणी कीं नरम पड़ी अर सासू री सेवा-चाकरी करण लागगी। काळू री मां तो झट समझगी कै मामलो कांई है। वा आपरा बाळ कोई तावड़ै मांय धोळा नीं कर्‌या। नाक री सळ तो औलाद ई काढै अर नीं जणै बीनणी आयां निकळै।

:: ठिकाणो ::
No. 247, II Floor,
9th Main, Shanti
Niketan Layout,
Arekere,
Bangalore-560076
Mob : 8742916957

पिछाण

म्हैं धणी लुगाई बगीचै में घूमण नै गिया। वठै अेक लुगाई लगैटगै च्यार बरसां रै टाबरियै साथै आई अर आपरै मोबाइल में मस्त

ISSN : 2320-0995

होय'र बातां करै ही अर टाबर रमै हो। रमतां-रमतां टाबर घरां चालण रो जिद करयो तो वा उणनै झिड़क दियो अर टाबर चुप। कीं जेज पछै वठै सूं खिलौणां वाळो निकळ्यो तो वो खिलौणा मांग्या अर वो उण सूं डांट खाई। पछै वो टाबर कणांई कीं खावण नै मांगै अर कणांई पेड़-पौधां री पत्त्यां तोड़ै, कणांई भाटो अर लकड़ी उठाय'र भागै। जणां वा कैयो, ''कितरो परेसान करै है। दो मिनट-ई सिचळो नीं बैठै कांई?''

म्हैं म्हारी जोड़ायत सूं कैयो, ''आ' कैड़ी मां है? आपरै टाबर नै बार-बार झिड़कै, डांटै-डपटै अर फटकारै।''

वा कैयो, ''आ इणरी मां नीं होय सकै। मां आपरै टाबर नै इयां बात-बात माथै नीं ओझाड़्या करै।''

वठै ई अेक दूसरी कुरसी माथै अेक आदमी बैठ्यो हो अर उणरै कनै उणरो मोबाइल पड़्यो हो। वो छोरो खेलतो-खेलतो वठै जाय'र उण मोबाइल नै छेड़्यो। जणां वो आदमी उणनै डांट्यो, ''अै छोरा, इण मोबाइल रै हाथ क्यूं लगावै? ओ खराब होज्यासी। चाल भाग अठै सूं। ठाह कोनी कठै-कठै सूं आय जावै। अठै भी दोय मिनट चैन सूं नीं बैठण देवै।''

जणां वा लुगाई कैयो, ''कांई होयग्यो जे टाबर हाथ लगाय लियो तो? तोड़्यो तो कोनी? टाबर नै सावळ भी तो कैय सकता हा। इणनै इतरो फटकारण री कांई जरूत ही?''

म्हारी जोड़ायत कैयो, ''म्हैं पक्कायत कैय सकूं हूं कै आ इण री मां ईज है।''

म्हैं कैयो, ''अबार थोड़ी जेज पैलां तो तूं कैय रैयी ही कै आ लुगाई इणरी मां नीं है अर अब कैवै है कै आ मां है।''

''हां, बात आ है कै मां आपरै टाबर नै थप्पड़ मार सकै, डांट सकै, झिड़क सकै, पण किणी दूजै नै कैवण अर डांटण नीं देवै।''

◆◆

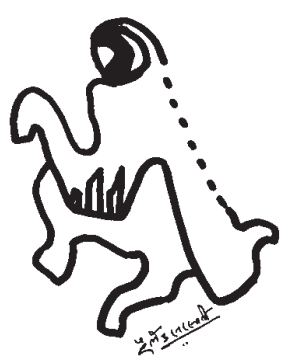

मोहन पुरी

रिक्साहाळो

वो
अडीक रियो हो
लगोलग च्यार घंटां सूं
टेसण माथै
आवणहाळी हरेक बस नै...
जद कदैई
सवारियां उतरती
बस मांय सूं
वो भाग'र जावतो
अर
आपरै रिक्सा खातर
वांनै नूंतो देंवतो—
'बाऊजी म्हैं ले चालूं?'
बाइजी म्हैं ले चालूं?'
पण सवारियां
उणरी बात नै सुणती ई कोनी
अर चालती जावती
जाणै वो कोई तगड़ो लुटेरो होवै...
तड़काऊ बेगी ठंड सूं
वो खड़्यो खड़्यो है
आपरै रिक्सा रै सागै
सगळो ई सत सूंप'र...

:: ठिकाणो ::
गांव-होड़ा
पोस्ट-खाचरोल
तहसील-मांडलगढ़
जिला-भीलवाड़ा
राजस्थान-311604
मो. 9672115032

सागै-सागै चढती
जा रयी है धूप
अर भूख-तिस्स ई
चढाय दी है उण रा
होठां माथै काळस री फेफरी
फेर भी वो उम्मीद नीं छोडै
अर नीं सरकावै आपरो रिक्सो ई...

जदैई सवारी उतरती
वो भागनै जावतो
अर निमळाई सूं कैवतो—
'बाऊजी, म्हैं ले चालूं?
बाईजी, म्हैं ले चालूं?'
पण सवारियां उणनै
उणीज भांत देख'र
आगै निकळ जावती...

अेक बस नै
आवती देख'र
वो फेरूं तावळो-सो भाग्यो
पण! हठात् ई...
वो केळै रै छिलकै सूं
पिसळग्यो
अर आवती बस
वीं रा सरीर नै...!

आपां लोग
कित्ती'क अणथाग
पीड़ावां ठूंस-ठूंस भर दी हां
वीं रै सरीर में
खुद ई लुटेरा व्हैर...!

भीलण

ओ बाबूसाब!
बोतलां में जको ओ सेंत छै नीं
इणरी मिठास असल में
विण रा गीतां जामी छै...
ओ ज्यो बजारां में
छबल्या भर-भर गूंद बिकै छै नीं
इणरो सत ई विण रै हाथां लेय'र
मां आपां नै दूध में पिलायो छै...
अर अतिन्दुआं में
कद घुळै नेह भर्यो सुवाद
वीं रै परस बिना...

वा जद-जद चढै
आडावळ रा मगरां पै
वीं री पायल री घमक सागै
नाचण लाग जावै
कैर, धोकड़ा अर बूंळ्या ई...
वा जद अेक हंसी हंसै
तो आपै ई हंसबा लाग जावै
सगळो आडावळ वीं री हंसी सागै...
वीं रीं सांवळी काया सूं
जद गरम रा टपका चू पड़ै तो
भाटां रो ई मोखातर हुय जावै...
हां! वा भीलण छै तो कांई छै
विण रा बडेरा ई
थामी ही आपां री धरमधजा नै
परताप रै लैरां-लैरां मुगलां सूं लड़तां थकां...
अर अभावां पाण ई
लड़ता रिया जीव छतां
पूंजा री दाकळ सागै-सागै।
मां! मूं थनैं हाथ जोड़ नमन करूं।

ISSN : 2320-0995

मोखातर

घणा दिनां सूं
आपै ई तळमळती
वा मुरधरा
उडीकै ही सूना मारग...
आकळ-बाकळ व्हैर
अमूजती रैती
मांय री मांय...

पून सागै व्हैर
चाल'र आवती धोरां माथै
अर गाबड़ ऊंची करनै
जोवती रैवती
इण सींव सूं
उण सींव तांई...
(नीं जाणै कुण रो मारग जौवे ही)

अेक दिन
जादू व्हैगो...

अेक कळांजळां
व्हैतो डोकरो
(जिणनै बेटा-भू घरां सूं निकाळ द्यो हो)
उमर चार-बीसी रै लगैटगै
उण सूनी मुरधरा पै
आपरा पग धर्‌या...

अणमाप आणंद री
हिलोरां उठी
रेत रा धोरां सूं...
कण-कण
उण बटाऊ री चाकरी में
ऊभो व्हैर
हाजरी मंडावै हो...
पगां रै
लारै-लारै चालती पून
रेत रै सागै
उण रा पांवडा चूम'र
उणनै निंवण करै ही
अर खुद रो भाग सरावै ही...
तपती लाय में
खेजड़ी उणनै
हरख भरी आंख्यां सूं
छियां री जाजम
माथै बिठाय लियो...

जादू व्हैगो हो
वीं दिन मुरधरा में...

छियां सरणै
आय'र
डोकरा नै कीं थ्यावस आयो
वो ओळ्यूं रा पानड़ा
सिंवरै हो...
चाणचकै ई
उण री डबडबी आंख्यां सूं
दो बूंद जळ री धार पड़ी
अर रेत में रळगी...
ओ दरसाव देख
पसीजै ही मुरधरा
अर काळी-पीळी व्हैर
पून सागै बणी भतूळियो...
अर जायनै डोकरा रै गांव
छिण मांय उडा दिया
सै छान-टापरा...

स्यांत व्है'र
पूठी बावड़ आई
खेजड़ी री छांव अर
दबावण लागी बटाऊ रा पांव...

जादू व्है रियो हो
मुरधरा में...

देखै हो विधना
आपरो काळज्यो थाम'र
आभै रा बळिंडा सूं...
अठै सूं ई
पीड़ रा चितराम ले'र
भाजै ही लूआं
गांव-स्हैरां कानी
अर निगळ आवै ही
मिनखां रो पाप...

पींप, रींट अर मामालूणी
डोकरा री काया नै
भाड़ो दे'र
गुड़कावै हा...
च्यार दिन व्हैगा हा
वीं काया नै
वीं मुरधरा में आयां
भूख तिस्स नै
मिटा'र गरबै ही
खेजड़ी री छियां...

जादू व्है रियो हो
अजै ई...
जद कदैई
वीं डोकरा री आंख
डबडबी व्हैती,
मुरधरा ई काळी-पीळी व्है'र
पून सागै भतूळियो बण'र
डोकरा रै गांव जाय'र
उडा आवती छान-टापरा...
(बेटा-भू इब इणनै ई गाळ्यां काढै हा)

आज भाकभाटियां ई
खेजड़ी तळै
डोकरो आपरा सांस छोड दिया हा...
ऊपर मींमझर
हालतांई बीजणी करै ही...
सांय-सांय करनै
पून चीखै ही...
डोकरा रै पगांलागणी कर'र
रोवै ही वा मुरधरा...

दिन ऊगतां-ऊगतां ई
खेजड़ी रै तळै ई
पून अर मुरधरा
कर न्हांखी ही
डोकरा री मुठी-माठी
रेत री गार देयनै...

वा काया
खेजड़ी रै तळै मोखातर पायो...

फेरूं आय'र
ऊभगी ही वा ईज मुरधरा
धोरां माथै
ऊंची गाबड़ कर'र
जोवै ही सूना मारग...।
◆◆

ISSN : 2320-0995

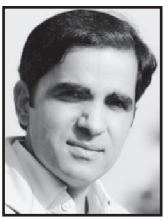

राजूराम बिजारणिया

सात गजलां

अेक

डीपी री तस्वीर बदळती घड़ी-घड़ी
लाइक अर कमेंट बरसता झड़ी-झड़ी

केवण नै तो फ़ॉलोअर री कमी नहीं
घर री माळा खिंडती जावै लड़ी-लड़ी

खिंडणो तो सो'रो घणो है मानो थे
दो'रो है जे जोड़ै कोई कड़ी-कड़ी

फ़ेसबुक अर इंस्टा में रुळगी पीढी
पड़ी हथाई गिरवी ताळां जड़ी-जड़ी

पर पीड़ा री बात मजाकां में उडती
खुद री पीड़ गड़ींदा खावै खड़ी-खड़ी

दोय

आओ आपां करां हथाई, बैठो तो
अेकलखोर! आवै कचाई, बैठो तो

धूड़ माजणै नाखां नुगरा लोगां रै
करां कियां ई साख बचाई, बैठो तो

:: ठिकाणो ::
श्री लक्ष्मी फोटो स्टेट
राजस्व तहसील रै साम्हीं
लूणकरणसर (बीकानेर)
राजस्थान-334603
मो. 94144 49936

खाखै रो इयां खिंडणो चोखो कोनी
अेकर फेरूं करां जचाई, बैठो तो

परबीती बातां री बातां छोडछाड
करां'क थोड़ी बात पचाई, बैठो तो

कूड़ फेंक द्यां ऊंढै, गहरै खाडां में
दोनां बीचै राख सचाई, बैठो तो

तीन

होठां थारै मुळक बिराजै सायबजी
आंख्यां राता डोरा साजै सायबजी

बिन खोल्यां होठां नै आंख्यां बात करै
गिरती-उठती पलकां लाजै सायबजी

म्हारी निजरां थारी निजरां सूं मिलतां
कड़कै बीजळ बादळ गाजै सायबजी

मन मीरां, मन राधा, मन रुखमण राणी
मन किरसण बण बंसी बाजै सायबजी

थारो हेत हियै रै वन में राम बण्यो
म्हारो मन मिरगै ज्यूं भाजै सायबजी

चार

कद मिनखां रो मोल हुवै
मिनखपणो अणमोल हुवै

प्रेम काळजै निपजै है
नैण तागड़ी तोल हुवै

ISSN : 2320-0995

मरवण ढोलै रीझै है
जिण रा मीठा बोल हुवै

प्रेम निभाणै रै सारू
जलम-जलम रा कोल हुवै

समझ सकै नीं भावां नै
बै पक्का बुग-लोल हुवै

पांच

प्रेम रो रंग कसूमल है
डूबी कितरी मूमल है

करड़ाई रो काम नहीं
इण री रंगत कोमल है

धीजो अर विसवास अटल
चालै कोनी छळबळ है

प्रेम चावतो इकलापो
मांगै कोनी दळबळ है

मानो क्यूं कमजोरी प्रेम
इक-दूजै रो संबळ है

छह

थे सगळा हो स्याणां-स्याणां, म्हांनै मानो भोळा क्यूं
थारी अेको-अेक सुणां जद, म्हे बोलां थे बोळा क्यूं

सब नै कैवो राख सांयती, लूंठा बचन सुणाओ हो
ज्यूं-ज्यूं थांरी बारी आवै, थे फेंको हथगोळा क्यूं

हवा बदळतां थे बदळो हो, किणी बात रो मोल नहीं
घड़ी-घड़ी रा रंग बदळता, पल में मासा तोळा क्यूं

मरी मरोड़ा मूंछ्यां री क्यूं, क्यूं करड़ाई कंवळी है
जाग्यां-जाग्यां करता हांडो, कूड़ा-कूड़ा रोळा क्यूं

खोल दुकानां कूड़ बेचता, मन मरजी रा भाव लियां
मोल चुकाणै बारी आई, टुरग्या चकगै झोळा क्यूं

सात

बोलण नै म्हैं बोल सका हां, पण म्हारै मूंढै ताळो
अजै मानता मिली नहीं है, मायड़ सारू दिन काळो

काळा-काळा आखर म्हांनै, नित चेतायां जावै है
भरो बूकिया रोज हौसलो, हिवड़ै में हिम्मत पाळो

हिम्मत पाळो, हिम्मत सागै, आगीनै बधता जाओ
मायड़ री पत राखण खातर, ईं कळझळ काया गाळो

गाळो काया इण सारू कै, मायड़ सांकळ खुल जावै
कंठ करोड़ूं हरखै गावै, आंख्यां सूं हटजै जाळो

जाळा हटणा ही चाहीजै, तद भासा रो मान बधै
आओ सगळा अेकै सागै, भासा रो डाकां नाळो

◆◆

ISSN : 2320-0995

जयसिंह आशावत

अखंड काव्य-साधना रो खंडकाव्य 'गाधि सुत'

राजस्थानी की सरुआत महाकवि चंद बरदायी जी का पृथ्वीराज रासो महाकाव्य सूं होई अर वेली क्रिसण रुकमणी री पैलो खंडकाव्य, ज्यो पृथ्वीराज जी राठौड़ ने मांड्यो। यो आज बी राजस्थान का कण-कण में महकै छै। ईं दौरान केई वचनिकावां भी आई ज्यांनै बी आपां खंडकाव्य की श्रेणी में राख सका छां। महाकवि सूर्यमल जी मिश्रण को रामरंजाट बी खंडकाव्य ही छै। हाड़ौती क्षेत्र में खंडकाव्यां में मुख्य नांव हाडा को न्याव और धरा को धणी परम आदरजोग स्व. गौरीशंकर कमलेश अर सूरजमल विजय को रणतभंवर का बोलता भाटा प्रमुख छै, पण ईं दिशा में अेक लंबा अंतराल तांईं म्हारी नजर में कोई खंडकाव्य हाड़ौती छैत्र में न आयो अर कोई विद्वान को खंडकाव्य आयो भी होवै तो वूंकी जाणकारी म्हनैं न होई, ईं लेखै म्हूं माफी चावूं छूं। हां, आदरजोग किशन जी वर्मा को नेमीचंद असी ई रचना छै पण वूंमें नूंवी कविता अर लंबी कविता को ज्यादा प्रभाव महसूस होवै छै।

काफी लंबो सम्यै गुजरबा कै पाछै आई खंडकाव्य विधा की सिद्धहस्त कवि, कहाणीकार, गजलकार, गीतकार अर उपन्यासकार जितेंद्र जी निर्मोही साहब की या पोथी 'गाधि सुत' राजस्थानी की हाड़ौती बोली को ऊंचो रचाव छै। ईं खंडकाव्य को कथानक विश्वामित्र जी राजऋषि का जीवन पै आधारित छै जो नूंवी पीढी नै भारतीय इतिहास का अेक अविस्मरणीय पात्र विश्वामित्र जी का संघर्षशील जीवन चरित्र की जाणकारी पाठकां नै करवावै छै। विश्वामित्र जी का जन्म सूं लेय'र जप-तप,

:: ठिकाणो ::
एडवोकेट
नैनवां, जिला बून्दी
राजस्थान
पिन कोड 323801
मो. 9414963266

तपस्या सूं देवराज इंद्र की घबराहट, तपभंग खातिर इन्द्र द्वारा मेनका को धरती पै भेजबो, मुनी को रीझबो, शकुंतला को जनम, मेनका को पाछो सुरग लौटबो, गुरु वसिष्ठ जी को छमाभाव कर दोनी मुनियां को मिलाप होबा की पूरी कथा ईं खंडकाव्य में सहज अर आसान भासा में रची गई छै। ईं पोथी में कुल 10 सर्ग छै।

प्रथम सर्ग में देवधरा भारत भूमि की वंदना, भौगोलिक अर आध्यात्मिक महत्ता, धर्म, भक्ति, शक्ति अर वेशभूषा को खूब-खूब चित्रण छै ज्यो कवि का राष्ट्रप्रेम को परिचायक छै। कवि ईं खंडकाव्य की सरुआत ही ईं तरै सूं करै छै :

या रिसियां मुनियां की धरती
या संतां कवियां की धरती
भज गोविंदम भज गोपाला
या राम नाम की छै धरती

भारत भूमि को गौरव गान करता हुया वै मांडै छै –

या धरती पर पुनीता छै
या धरती सबद दुहिता छै
ईं धरती में रची बसी
रामायण छै, गीता छै

ईं खंड काव्य को दूसरो सर्ग गाधिसुत छै जीं में विश्वामित्र जी को जीवन परिचै अर वांकी कार्यशक्ति को मनोहारी बखाण छै :

बायां उठाई तो सरग में
हालग्यो इन्दर तकात
यो दिखा दयो जगत नै
काई होवै छै मरद जात

जीवन में जप-तप सूं आया बदळाव को यो छंद –

क्रोधी मनख विश्वरूप छो
बणग्यो कस्यां ऊ विश्वामित्र
ईं लेखै म्हनै रचज्यो
विश्वामित्र को यो चरित्र

चौथो सर्ग 'विश्वरथ' शीर्षक सूं छै। विश्वरथ का राजा का सुशासन को चित्रण :

चोखो छो व्यापार गठन
अर करसाणी भी चोखी छी
छा आम नागरिक भी राजी
अर न्याय व्यवस्था लोठी छी

पांचवों सर्ग गुरु वसिष्ठ जी की ख्याति, उदारता, अतिथि सत्कार गौ नंदनी की महिमा कै ताईं समर्पित छै :

फौज समेत जीमण बैठ्या
षटरस भोजन आणंद लियो
अचरज में होग्यो विश्वरथ
ईं सिद्धपुरुस नै कांईं करयो
वै बोल्या राजन या संदी
तो नंदिनी की माया छै
ईंने एक सैंकड़ा न्ह एक
लख जजमान जमाया छै

सातवों सर्ग वसिष्ठ विश्वरथ जुद्ध को छै जीमैं राजा विश्वरथ द्वारा विश्वजीत यज्ञ करबो, यज्ञ में अग्नि देव द्वारा दिव्यास्त्रां को राजा के तांईं हरख'र दान देबो पण शर्त भी लगा देबो कै यांको उपयोग सही ठौर अर सही बगत पै ई करजे वरना ये काम न करैगा को बरणन छै :

जाता जाता क्है गिया देव
तूं सही जगा ये लीजै काम
जो नरदोस थनै मारया
तो मट जावैगो थारो नाम

आठवों सर्ग 'मेनका' छै जींकी सरुआत ही मेनका का सौंदर्य बरणन सूं होवै छै।

वा गोधूळी सी धूळी धूळी
वा तड़काउ को उजियारो
ऊंकी चूनड़ चमक्या तारां की
वा चन्दकरण को उणियारो

ईं सर्ग को यो बंद तो गजब को ही सिणगारिक छै :

नैण खंजन नैन बरखा
नैण बादळ कंवळ छै
नैण सूं ई वन्दना छै
नैण सूं ई आचमन छै

नवों सर्ग तपोवन में विश्वामित्र जी का तप की कहाणी छै जीं में कवि की कलम प्रकृति का चितराम यूं उकेरै छै :

पुसबां की बेलां लटा लूम
डूंगर बनराई ठाम ठाम
पंछी कलकारी मारै छा
रुपाली धरती देव धाम

विश्वामित्र अर मेनका के बीचां प्रेम का बीज कस्यां फुटाण ले छै, कवि सजीव चित्रण करै छै :

नर-नारी में सुंदरता देखै
नारी नर में रूपालोपण
दोन्यूं की नजरां मिल जावै
वै देखै फेरूं अेक सपन

दसवों सर्ग विश्वामित्र नांव सूं उपसंहार छै जीं में विश्वामित्र कै तांईं मेनका द्वारा भेजबा को रहस्योद्घाटण करबो, विश्वामित्र जी को नाराज होय'र मेनका कै तांईं आश्रम सूं क्हाडबो, शकुंतला को जलम अर कण्व ऋषि के तांईं सूं'पर इन्दरलोक जाबा को मार्मिक विवरण छै तो गुरु वसिष्ठ जी की सहृदयता, विश्वामित्र जी को पश्चात्ताप अर क्रोध त्याग'र चरण शरण होबो अर वसिष्ठ जी द्वारा विश्वामित्र जी कै तांईं गळै लगा'र पुत्र हत्या सूं माफी देबा को बरणन भी छै ।

अंतिम छंद में कवि विश्वामित्र जी की महिमा में लिखै छै :

विश्वामित्र मनख अस्यो
ज्यो दूजो सरग निर्माण करै
दे अमर मंत्र गायत्री को
मनख जीं ईं चत सूं सुमिरै।

ईं तरै यो खंड काव्य पूरो होवै छै। आदरजोग जितेन्द्र जी निर्मोही साब की कलम की सहज शब्दावली धारा प्रवाह में कोई कमी ईं खंडकाव्य में कठैई बी न आबा दै। सीधा अर सरल सबदां का प्रयोग सूं यो खंडकाव्य आम जनमानस की जबान पै छावैगो, अस्यो म्हारो बस्वास छै। ईं ग्रंथ रचना में कवि की अथक काव्य साधना छै, सतत अध्ययनशीलता छै, भावनावां को ज्वार छै, साहित्यिक निखार छै अर मनोभाव परखबा की ग्हैरी पकड़ छै, जीं लेखै म्हारो निवण अर बधाई।

◆◆

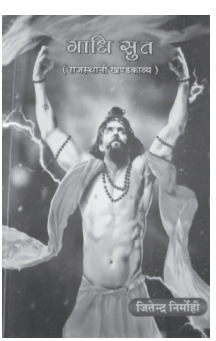

पोथी
गाधि सुत
विधा
खंडकाव्य
कवि
जितेन्द्र निर्मोही
प्रकाशक
जन चेतना प्रकाशन, कोटा
संस्करण
2019

ISSN : 2320-0995